मयाङ देश की भाभी

मूल : लेशाङथेम तोन्दोन

अनुवाद : एलाङ्बम विजय लक्ष्मी

ई-मेल : velangbam@yaahoo.com

पात्र परिचय

1. अंगोजाओ : एक शराबी (शराब बेचता भी है), आयु- लगभग 65 वर्ष।
2. सनाहन्बी : अंगोजाओ की पत्नी, आयु- लगभग 60 वर्ष।
3. डॉ. नोङाल : अंगोजाओ का डॉक्टर बेटा, आयु- लगभग 30 वर्ष।
4. राधे : अंगोजाओ की बेटी, आयु- लगभग 28 वर्ष।
5. नन्दलाल : राधे का पति, (नृत्य शिक्षक), आयु- लगभग 60 वर्ष।
6. बाबातोन : डॉक्टर नोङाल का दोस्त।
7. लड़का- : डॉ. नोङाल का बेटा, आयु- 5/6 वर्ष।
8. मयाङ स्त्री : डॉ. नोङाल की पत्नी, (नोङ्गाल की सम-वयसी)।

स्थान- अंगोजाओ का सरकण्डे के छप्पर वाला घर

समय- पूर्वाह्न, लगभग 11.00 बजे।

(बरामदे के एक कोने में नन्दलाल कुर्सी पर बैठ ऊँघ रहा है। पास पड़ी मेज पर एक किताब और काले रंग का एक ग्लास रखा हुआ है। एक मोढ़ा भी पास ही रखा है। बरामदे के दूसरी ओर कौना की चटाई बिछी है, जिस पर एक मैतै पुङ और एक ढोलक सीधे रखे हुए हैं। दाएँ हाथ में एक सूटकेस और बाएँ हाथ में 5/6 साल के एक लड़के का हाथ थामे डॉ.नोङाल ड्योढ़ी पर आकर खड़ा हो जाता है। ऊँघते हुए नन्दलाल को झुक-झुककर देखता है और आश्चर्यचकित रह जाता है।)

डॉ. नोङाल : (संशय के साथ स्वगत) यह कौन है, जो यहाँ बैठा ऊँघ रहा है ! हमारे बाजी तो नहीं लग रहे। कोई बाहरी लगता है और देखो, अपने ही घर की तरह कैसे आराम फरमा रहा है ! (गुस्से में, थोड़ी ऊँची आवाज़ में) इमा, हो इमा! मैं अन्दर आऊँ या यहीं से लौट जाऊँ ! कुछ अति नहीं मच रही इस घर में ! नहीं अच्छा लग रहा कुछ भी।

सनाहन्बी –(आश्चर्य के साथ बाहर आती हुई) अरे बेटा नोङाल ! कहाँ से, बताया भी नहीं कि आ रहे हो !

डॉ. नोङाल- इमा, अभी ही तो पहुँचा हूँ। सोचा, सब को चौंका दूँ, पर मैं ही चौंक गया।

सनाहन्बी- रुको, आग उलाँघ कर आओ, बड़ा अच्छा हुआ तुम आ गए।

डॉ. नोङाल- आग मत जलाइए, मैं भीतर नहीं आ रहा हूँ। सबकी इच्छा-पूर्ति के लिए मैं यहीं से वापस चला जाऊँगा, इमा !

सनाहन्बी- ये तुम बोल क्या रहे हो !

डॉ. नोङाल- मैं जान गया हूँ, अब यह घर पहले जैसा नहीं रहा। आप लोगों को जो अच्छा लगे कीजिए। मेरा भी दूर रहना ही अच्छा है।

सनाहन्बी- आते ही जी जलाने वाली बात मत करो। अच्छा नहीं लगता। इससे अच्छा है, कपड़े वगैरह बदलो और आराम करो। मैं तुम्हारे लिए खाना तैयार करती हूँ।

डॉ. नोङाल- खाने की बात छोड़िए इमा, मेरा दिल जला जा रहा है। ये सब देखकर तो मेरा जी मिचलाने लगा है। मैं वापस चला जाता हूँ।

सनाहन्बी- इतनी हड़बड़ी में क्यों हो बेटा! कहीं शराब तो नहीं पी आया! तेरे पिताजी ही जो सुबह से धुत्त पड़े रहते हैं, वही क्या कम था! इस घर मैं एक पल रहने का मन नहीं करता। लगता है, कहीं चली जाऊँ।

डॉ. नोङाल- जानता हूँ इमा, आप क्या कर रही हैं और बाजी क्या कर रहे हैं, मैं सब जानता हूँ। आप लोग जो मर्जी कीजिए और खुश रहिए। सब अपनी-अपनी ज़िंदगी जिए, मुझे क्या !

सनाहन्बी- (स्वगत) मेरा बेटा पहले जैसा नहीं रहा। अजीब-अजीब बातें करने लगा है। जरूर किसी ने सिखा-पढ़ा दिया है।

डॉ. नोङाल- (गुस्से पर काबू पाकर) मैं भी क्या करने लगा ! आते ही बरसने लगा। मुझसे गलती हो गई इमा, मैं कुछ ज्यादा ही ताव में आ गया। लंबा वक़्त हो गया घर आए, इसलिए सिर में तूफान मचने लगा था। गलती मेरी ही है इमा!

सनाहन्बी- छोड़ो बेटा, इस घर के आचरण के कारण ही तुमने गलत समझ लिया होगा! तुम्हारा कोई दोष नहीं, मैं जानती हूँ।

डॉ. नोङाल- पर इमा, यह खुरा कौन हैं ,जो कुर्सी पर बैठे ऊँघ रहे हैं !

सनाहन्बी- खुरा नहीं बेटा, ये तुम्हारे बहनोई साहब हैं। तुम्हारी बहन, राधे के पति, नन्दलाल, नृत्य के मशहूर अध्यापक हैं।

डॉ. नोङाल- क्या राधे की शादी हो गई !

सनाहन्बी- अरे, क्या यकीन नहीं आ रहा है ! तो अपनी बहन से ही पूछ ले।

डॉ. नोङाल- (व्यंग्य से हँसते हुए) केवल चार लोगों का परिवार है यहाँ। छल से सजाधजा ! मशहूर स्त्री-

पुरुषों का घर! ऐसे में कौन चकित नहीं होगा ! कोई भी ऐसा नहीं, जिस पर यकीन किया जा सके।

सनाहन्बी- (थोड़ी नाराज़गी के साथ) वैसे भी धूप बहुत चढ़ गई है। मैं ज्यादा कुछ बोलना नहीं चाहती नोङाल। मजाक मत करो, मेरा पारा वैसे ही चढ़ा हुआ है। कहीं घर पर ही कयामत न आ जाए! जो भी कहना-सुनना है, आराम से कहना। आते ही बवाल मचा रहे हो। मुहल्ले के सामने डूब मरने वाली बात है। तुम भी डॉक्टरी पास कर चुके हो। कम से कम कंचे खेलने वाले बच्चों की तरह मत करो, अच्छा नहीं लगता।

डॉ. नोङाल- आपके कहने का मतलब है कि आप और बाजी जो भी करें, मुझे मानते चले जाना चाहिए, क्यों ! क्या मैं इस घर का सदस्य नहीं हूँ, जो किसी पराए की तरह तमाशबी बन कर चुपचाप देखता रहूँ !

सनाहन्बी- मेरा बेटा बड़ा हो गया है, इसलिए बातें भी हिसाब से करना सीख गया है। हर बात सुई चुभोने वाली कर रहा है। न जाने कहाँ से गुन कर आया है! रुको नोङाल, क्या तुमने हमें पैदा किया है ! हैसियत से बढ़कर बातें न करो। बाद में तुम्हारा ही नुकसान होगा। मेरा कहना सुनो!

डॉ. नोङाल- मैं भी देख रहा हूँ माँ ! घर संभालने वाले जितने भी लोग हैं, उनमें से किसी की भी नीयत ठीक नहीं है। जो सही है, वही कह रहा हूँ। किसी के दिल में फाँस चुभती है तो मैं क्या करूँ !

सनाहन्बी- मेरा बेटा पढ़ने तो डॉक्टरी गया था, पर लगता है, राजनीति पढ़ आया है! चलो, अच्छा ही है ! क्या पता, चुनाव लड़े तो तरक्की का द्वार खुल जाए! लगता है, तुम पर तो यही काम ज्यादा जँचेगा भी।

डॉ. नोङाल- सच कह रहा हूँ इमा, इस बार मेरे दिल को बहुत ठेस लगी है। राधे को ही देख लो, माँ-बेटी बिलकुल एक जैसी हैं। यह बूढ़ा न मिलता, तो जैसे और लड़कों का अकाल ही पड़ गया था !

सनाहन्बी- (स्वगत) बेटा ज्यादा पीकर आ गया है। बेचारा, मैं भी कहाँ सिर खपाने लगी !

डॉ. नोङाल- जो सच और झूठ का अंतर नहीं समझता, वह उसे भी पागल समझ लेता है, जो पागल नहीं होता। विवेकहीनों के बीच मेरा इंसान बने रहना भी एक गलती है। बड़ा कष्ट होता है।

सनाहन्बी- गलती करने वाला मेरा अकलमंद बेटा! मैंने तुम्हें गलती करने के लिए पैदा नहीं किया। अपनी बुद्धि लोगों के इलाज में लगाओ, पंचायती करने में नहीं। मेरे साथ तो जैसा भी बर्ताव करो, कोई बात नहीं। लेकिन किसी रोगी के साथ भी पंचायती करने लगोगे, तो दवा की बोतल तुम्हारे सिर पर फोड़ देगा। संभलकर रहना, बताए देती हूँ।

डॉ. नोङाल- रोगी हो या निरोगी, अगर कोई भी स्वस्थ परंपरा और नियमों के विरुद्ध चले, तो क्या सही पाठ नहीं पढ़ाना पड़ता इमा !

सनाहन्बी- इस तरह करोगे, तो तुमसे इलाज करवाने कौन आएगा! भुनगे-मच्छर भी पास नहीं फटकेंगे। मक्खी मारते रहना पड़ेगा, समझ गए!

डॉ. नोङाल- वो तो इमा मेरे गुणों को जानने के बाद नतमस्तक ही होंगे। यह तो मैं गर्व के साथ कह सकता

हूँ।

सनाहन्बी- सही बात करूँगी तो सुनोगे नहीं। गुस्सैल इतने हो कि दुर्वाशा के ढाँचे में ढल कर निकले हो। तुम्हारे बारे में सोच-सोचकर परेशान हो रही हूँ नोङाल!

डॉ. नोङाल- सही जगह गुस्सा करता हूँ। किसी पराए पर कैसे चिल्ला सकता हूँ ! मैं भी इज्जत के साथ जीने वाला हूँ।

सनाहन्बी- तुम जैसों से बात करने से तो अच्छा है, शेरों को संभालूँ। वही ज्यादा सही रहे।

डॉ. नोङाल- मुझे आप बहुत बुरा, राक्षस की तरह समझ रही हैं इमा!

सनाहन्बी- ठीक है, आज मेरी और तुम्हारी बात साफ हो ही जाए। नहीं तो तुम मुझे आगे भी गलत ही समझते रहोगे। इतनी दुःखी होने के बाद अब उचित-अनुचित नहीं सोचूँगी। बता ही देती हूँ, सुनो, अंगोजाओ नाम का तेरा बाप नाकारा और आलसी है, यह तो तुम भी जानते हो !

डॉ. नोङाल- जानता हूँ इमा, जानता हूँ।

सनाहन्बी- वह शराब बेचता है, यह भी जानते हो !

डॉ. नोङाल- जानता हूँ। यह बात तो मुहल्ले का हर बच्चा जानता है।

सनाहन्बी- बेचता ही नहीं, शराब पीकर हंगामा भी करता है, यह भी जानते हो !

डॉ. नोङाल- कह तो दिया, सब जानता हूँ इमा! पीने से चढ़ती ही है। और चढ़ जाने पर हंगामा करेगा ही, साफ सी बात है।

सनाहन्बी- तो फिर तुम शराब बेचने वाले पियक्कड़ बाप के बेटे हो, इसे भी स्वीकार करते हो!

डॉ. नोङाल- हाँ स्वीकार करता हूँ। क्या इसे झुठलाया जा सकता है भला ! मुझे तो आप पर ज्यादा आश्चर्य हो रहा है।

सनाहन्बी- मुझ पर क्यों आश्चर्य हो रहा है !

डॉ. नोङाल- आप भी शराब बेचने वाले की बीवी, शराब बेचवा। पियक्कड़ की बीवी, पियक्कड़ी। मेरी बहन भी शराब बेचने वाले और वाली की बेटी- सेवारी। इसे झुठलाना मुमकिन नहीं, यह तो सीधी सी बात है।

सनाहन्बी- मुझे कह रहे हो, शराब बेचवा! पियक्कड़ी! ऐसा क्यों कह रहे हो! यह कुछ ज्यादा नहीं हो गया ! जो भी ऐसा बोलेगा, उसके साथ मरने-मारने को भी तैयार हूँ, जान लो।

डॉ. नोङाल- घर का मालिक शराब बेचेगा, तो मालकिन का नाम जुड़ना स्वाभाविक है। इसे आपको इतनी गम्भीरता से लेने की जरूरत नहीं है।

सनाहन्बी- ऐसा है, तो हम भी थोड़ा-थोड़ा पीना सीख लेते हैं क्यों ? सब एक साथ नशे में रहेंगे तो अच्छा ही होगा। तमाशा खड़ा हो जाएगा।

डॉ. नोङाल- पीने को नहीं कह रहा हूँ इमा, रोकने को कह रहा हूँ, क्योंकि भद्दा लगता है। आप ही देखिए,

आज मैं किसी के सामने मुँह नहीं दिखा पा रहा हूँ। इसका आपको जरा भी अफसोस नहीं है।भले ही मैं कितना ही अच्छा डॉक्टर क्यों न हो जाऊँ, मेरी इज्जत कौन करेगा! मैं बरबाद हो गया हूँ। शराबी पति-पत्नी ने मिलकर मेरे सारे रास्ते बंद कर दिए हैं। कोई उपाय नहीं रह गया। अपने बच्चों के बारे में भी नहीं सोचते। अब तो आनंद ही आनंद है, कंगाली में मरना पड़ेगा।

सनाहन्बी- समझाने–बुझाने का कोई असर ही नहीं दिखता, इसीलिए छोड़ दिया है कि जो जी में आए करे। अब केवल रस्सी से बाँधकर रखना ही रह गया है। उसे समझाना मेरे बस का नहीं है। कोई चारा नहीं है।

डॉ. नोङाल- इसीलिए इमा, मुझे ये सब दिखाई न दे, मेरा दिमाग खराब न हो, इतने सालों से मैं घर नहीं आया। घर आता तो पागल ही हो जाता। गुस्सा आता, तनातनी रहती। घर ही बिखर जाता। ऐसा न हो, इसलिए बर्दाश्त करता रहा, छुपा बैठा रहा। पाँच साल हो गए न!

सनाहन्बी- और खर्चा कहाँ से और कैसे चला रहे हो ! मेरा बेटा बड़ा सयाना हो गया है।

डॉ. नोङाल- यह आपको जानने की जरूरत नहीं है। जान भी जाओ तो कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं भी हवा और घास तो खा नहीं सकता था, इसलिए मुझसे जैसा बन पड़ा, करता रहा। मैं जिया, जी रहा हूँ और जिऊँगा ।अस्स, उस समय कितनी भद्द सहनी पड़ी! बड़ा पछतावा होता है।

(कहते-कहते आवाज में भारीपन आ जाता है, रोने को होता है।)

सनाहन्बी- मेरा बेटा इतना नाराज़ है । यहाँ आकर इतना कुछ बर्दाश्त कर रहा है। कैसा दुर्भाग्य है मेरा!

(रुआँसी हो जाती है) तुम मुझसे नाराज़ मत हो नोङाल! डॉ. नोङाल- नाराज़ नहीं हूँ इमा। मैं किसी से भी नाराज़ नहीं हूँ। यही मेरे भाग्य में लिखा था। पर एक बात का बड़ा अफसोस है। किसी और की नहीं, छोटी बहन की जिंदगी का। पढ़ाई-लिखाई भी ठीक से नहीं की और मझधार में ही भटक गई, इसका बहुत अफसोस है।

सनाहन्बी- हाँ, वह तो बच्ची है। नादान-नासमझ है। उसे तो अभी सीधे पैर रखकर चलना भी नहीं आता। एक दिन तेरे पिताजी शराब में धुत्त थे, उस समय सही-गलत का विचार किए बिना ओजा नंदलाल को बातों में फंसाकर बेटी सौंप दी। तेरी बहन की कोई गलती नहीं है, न ही मेरी कोई गलती है।

(नंदलाल के गाल पर मच्छर ने काटा या मक्खी बैठ गई । हाथ उठाकर चट से मारा और सहलाया। गहरी नींद में करवट-सी लेकर फिर सो गया।)

डॉ. नोङाल- सफेद बाल, झुर्रियों वाला चेहरा, इस बुड्ढे के अलावा मेरी बहन के लिए कोई नहीं मिला था इस दुनिया में! अमीर दिखने वाले कितने ही जवान द्वार पर मडराते थे, उनमें से किसी को नहीं पटा पाए। आप भी चुपचाप देखती रहीं।

सनाहन्बी- सब तुम्हारे पिता की लीला है। शराब की लीला कितनी मनोरंजक हो सकती है! हमें कुछ बोलते डर लगता है। तुम्हारे पिताजी के कड़े हाथों को भली-भाँति समझती हूँ, स्वाद भी चखा है। जान गँवाने से अच्छा है चुप रहना, यही सोचकर

सहती रही हूँ इबुङो। भीतर से मैं भी तड़प रही हूँ, पर इसे कौन जान पाएगा!

डॉ. नोङाल- आप भी इमा कुछ ज्यादा ही डर रही हैं। सही काम करते हुए इतना डरने की जरूरत नहीं है। कोई मूर्ख हो तो समझाने के लिए कहना ही पड़ता है।अज्ञानी को ज्ञानवान बनाना, उसे सिखाना तो पुण्य का काम है, पुण्य का।

सनाहन्बी- बाज आई ऐसे पुण्य से, नहीं चाहिए कोई पुण्य। बेवकूफ की तरह कभी किसी कोने में पड़ी रहती हूँ, कभी खंभे की तरह कहीं खड़ी रहती हूँ। जिस दिन मरूँगी, सारे कष्टों-परेशानियों से मुक्ति मिल जाएगी।

डॉ. नोङाल-आप तो पिताजी को जानती हैं कि वे भोले हैं, नासमझ हैं, अंधेरे में चलने के आदी हैं, तो आपको रोशनी दिखानी चाहिए न! अंधेरे में चलते हुए किसी के पाखाने में या नाले में गिर जाएँ, तो आप को ही बाल्टी भर-भरकर धुलवाना पड़ेगा न! इतना तो न चाहते हुए भी करेंगी ही। अगर पिताजी किसी के बगीचे में मधुमक्खी की तरह हवा खाने निकल जाएँ और खुग्री वाली किसी रानी मधुमक्खी से सामना हो जाए और वह पिताजी के कान पर काट ले, तो आप क्या करेंगी ! सोचना तो पड़ेगा ही । इमा, समय बड़ा विकट है।

सनाहन्बी- ऐसा है, तो किसी को तनख्वा देकर उठते-बैठते तुम्हारे पिताजी की निगरानी करवानी पड़ेगी, पर इसमें भी पैसा लगेगा।

डॉ.नोङाल- आप तो पिताजी को एक बात तक नहीं कह पातीं। मुझे डाँटने के लिए जितना बोल रही हैं,उतना पिताजी को समझाने में लगातीं, तो यह घर भी तरक्की कर रहा होता, खुशहाली छाई होती। अपने घर का तो आपको कुछ भी अता-पता नहीं, सब चौपट है।

सनाहन्बी- यह स्कूल नहीं है बेटा, कि बेटा मास्टर बने और माँ छात्रा बन जाए, यह तो उल्टी बात हो गई, लोग हँसेंगे सुनकर। जैसे जबान चलाने में माहिर हो, इलाज करने में हो जाओ, तो तुम्हारा नाम फैले । मैं भी गर्व करूँ!

डॉ.नोङाल- सड़े-गले इस घर में कुछ भी करने का जी नहीं करता इमा। जैसे-तैसे जी लेने से ज्यादा कोई आशा मत रखना ।

सनाहन्बी- सोचा था, तुम आओगे तो मन को राहत मिलेगी, पर तुम तो और ज्यादा दुःखी कर रहे हो इबुङो! बात मत बढ़ाओ, बस बहुत हो गया। अब जाओ आराम करो।

डॉ.नोङाल- हुम्म! मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है। ऊँघने वाले इस बुजुर्ग को धमका कर भगाता हूँ। पिता पर हाथ उठाना अधर्म होगा। सबका गुस्सा इस बुजुर्ग पर ही निकालता हूँ।

(कमीज ऊपर सरकाता है। आँखें निकालते हुए नथुने फुलाकर फुँकार-सी भरता है।)

सनाहन्बी- ऐसा करना गलत होगा बेटा, कोई सो रहा हो, तो ऐसा नहीं करते। अधर्म होगा। तेरी बहन को दुःख हो, ऐसा कुछ न करना। सभ्य बनकर शांति से बैठे रहो।

(मोढ़े पर बैठाती है, जैसे उसे रोक रही हो।)

डॉ.नोङाल- मुझे इसकी शक्ल बर्दाश्त नहीं हो रही है। इतनी धूप में ऊँघ रहा है। रात को चोरी करने जाता है क्या !

सनाहन्बी- कहा न चुप हो जाओ! सुन लेंगे तो अच्छा नहीं लगेगा। बेअदबी मत कर छोटे बच्चे की तरह।

डॉ.नोङाल- आपकी शह पा कर ही इतना बिगड़ गए हैं।

सनाहन्बी- शह नहीं दे रही हूँ, पर जो तुम कर रहे हो, वह भी सही नहीं है। क्या तुम्हें ऐसा करना सही लगता है! नृत्य सिखाने के कारण थक गए होंगे, इसलिए आराम कर रहे हैं। आराम करने दो, क्या हो गया!

डॉ.नोङाल- ठीक है, आज बख्श देता हूँ, नहीं तो अभी ही बता देता! बूढ़ा-खूसट जवान लड़की चाहिए। इसकी उमर के तो ईश्वर का ध्यान करने लगते हैं। (नोङाल के आवाज ऊँची करने से नन्दलाल की नींद खुल जाती है। आँखें खोलने को होता है, लेकिन फिर ऊँघने लगता है।)

सनाहन्बी- एहे ! आँखें खोलकर फिर सो गया। कितनी गहरी नींद में है, नन्दलाल ! सुन रहे हो ओजा! उठो, बहुत देर हो गई। (नन्दलाल जमुहाई की आवाज के साथ अंगड़ाई लेता है। आँखें मिचमिचाता है। नोङाल को देखकर मानो सोच रहा हो कि यह कौन होगा !)

नन्दलाल- (टेबल पर रखा काला चश्मा उठाकर जल्दी से लगाता है।) बाहर डॉक्टरी पढ़ने वाले साले साहब हैं क्या आप ! फोटो तो देख चुका हूँ।

डॉ.नोङाल- जी खुरा।

सनाहन्बी- खुरा नहीं बेटा, अपने जीजाजी को खुरा नहीं कहते। रिश्ते का सही नाम लो। (नन्दलाल से) जरा काला चश्मा उतार दो, शर्माने की जरूरत नहीं है।

नन्दलाल- (चश्मा उतारता है, कुर्सी से उठकर) तो मैं जरा.... (दण्डवत प्रणाम करने को होता है)

डॉ.नोङाल- ए! ए! बस-बस, इसकी कोई जरूरत नहीं है। अब इसका चलन नहीं रहा। ये सब पुरानी बातें हैं।

सनाहन्बी- अच्छा हुआ तुम लोग मिल लिये। बातें करो। न जाने राधे कहाँ रह गई। मैं जरा रसोई का हाल देख लूँ। (चली जाती है)

नन्दलाल- साले जी, आप बड़े गुस्से में दिख रहे हैं, क्या बात है ! इस मोढ़े में खटमल हैं , कुर्सी पर बैठना अच्छा रहेगा।

डॉ.नोङाल- किसी को ठीक करने का सोच रहा था, नहीं कर सका छोड़ना पड़ा।

नन्दलाल- किसे, मुझे बताइए, मैं ठीक कर देता हूँ। सपने में मैं भी किसी से हार गया, इसलिए दुःखी था।

डॉ.नोङाल- सब बीती बातें हो गईं। बेकार की बातें। मैं ही नाराज़गी दिखाकर शर्मिंदा हो रहा हूँ।

नन्दलाल- नाराज़ होना, मार-पीट, झगड़ा, हालत और वक़्त के हिसाब से होता है। इसमें शर्माने की क्या

बात है! मैं तो ऐसा ही सोचता हूँ। एक दिन कॉलेज के गेट पर ओजा तोम्बी ने एक छात्र को जो पीटा, तो झुण्ड में सब देख रहे थे, कोई कुछ नहीं बोला, पर एक छात्रा ने ओजा तोम्बी को खूब कोसा। सुना है उसने घर पर खाना भी छोड़ दिया।

डॉ.नोङाल-अभी पढ़ाई कर रहे हैं ! तो क्या आप जवानी में मटरगश्ती करते रहे !

नन्दलाल- पढ़ाई नहीं कर रहा हूँ। ओजा हूँ। नृत्य सिखाता हूँ, डान्स कॉलेज में।

डॉ.नोङाल- ओह ! नृत्य के ओजा हैं। घर कहाँ है! और तनख़्वा का क्या हाल है !

नन्दलाल- घर तो यहीं है, जहाँ अभी रह रहा हूँ। तनख्वा राधे को सौंप देता हूँ। इसमें कोई दखलंदाजी नहीं करता। मेरी आदत भी नहीं है।

डॉ.नोङाल- इसका मतलब घर जमाई बनकर ! पर अपना एक घर तो होना चाहिए। घर जमाई हो, सो तो हो ही। इसमें लज्जा करने जैसा कुछ नहीं। हमारे पिताजी भी माँ के यहाँ घर-जमाई बन कर रहे। उसी तरह हो गया, राम मिलाई जोड़ी। सुंदर! अतिसुंदर !

नन्दलाल- इस बारे में, मैं कुछ नहीं जानता। घर चलाने के काबिल बनूँ, बस इतना ही।

डॉ.नोङाल- जो भी हो, अपना एक असली घर तो होना चाहिए कि नहीं !

नन्दलाल- होना तो चाहिए, पर नहीं होने के बराबर है, नहीं है।

डॉ.नोङाल-अपने जन्मस्थान की बात है। घर तो कहीं भी हो सकता है।चाहे होटल में रहो, भाड़े का लो, सब घर ही घर है। बस पैसै की बात है। पैसा हो, तो रहने के लिए जगह ही जगह पड़ी है। परेशानी की कोई बात नहीं।

नन्दलाल- समझ गया। ऐसा है, बताते हुए झिझक हो रही है। नाले से उठकर आया हूँ, ऐसा भी कह सकते हो।

डॉ.नोङाल- फिर भी जान तो सकता हूँ! नाले में मछलियाँ भी रहती हैं। कमल-कुमुदिनी भी खिलते हैं। सुंदर फूल हैं ये भी।

नन्दलाल- ठीक कहा, ऐसा भी क्या हो जाएगा! मुझे पैदा करने वाले पिता असम के कछार जिले के रहने वाले थे। सगोलबंद तेरा बाजार में इमा के घर व्यापार करते हुए लम्बे अर्से तक घर जमाई बनकर रहे। व्यापार के ही सिलसिले में एक दिन अचानक होजाई के लिए निकले, फिर कभी वापस नहीं आए। कोई कहता है लापता हो गए हैं,कोई कहता है कहीं छिप गए। उस दिन से उनका कुछ अता-पता न चला। फिर समय के साथ यादें धुंधली हो गईं।

डॉ.नोङाल- रोंगटे खड़े करने वाली बात है! अचरज भरी!

नन्दलाल- कुछ सालों बाद मैं भी माँ का पिछलग्गू, गाय के बछड़े की तरह खुराइ में अच्छे स्वभाव वाले

एक बुजुर्ग का बेटा बन गया। पढ़ाई के साथ नृत्य भी सीखा। जब मैं तीस का हुआ, तो दुर्भाग्य से माँ चल बसीं। कोई कहता है, टी.बी. से, कोई कहता है, केंसर से । असली बीमारी का पता ही नहीं चला।

डॉ.नोङाल-अब तो टी.बी. जैसी बीमीरी का इलाज बहुत आसान हो गया है। अफसोस!

नन्दलाल- खुराइ वाले पिता ने उनके पास रहकर घर बसाने के लिए क्वाकैथेल की एक लड़की से शादी की बात चलाई, पर वह लड़की तो एकदम बराबर की लगती थी, इसलिए मैंने ही शादी से इंकार कर दिया।

डॉ.नोङाल- ठीक ही है। माँ जैसी लगने वाली स्त्री की ओर तो देखना भी नहीं चाहिए।

नन्दलाल- मुहूरत ही खराब हो गया। खुराइ वाले पिताजी भी नहीं रहे। अनिश्चितता की स्थिति में याइस्कुल पहुँच गया। मनुष्य प्रवृत्ति है, ऐसा कोई नहीं, जो सुन्दर को पसंद न करे। और, मेरी स्थिति ऐसी थी कि घर जमाई बनने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था। घर जमाई बना। अमुसना नाम था उसका। गज़ब की सुन्दर थी। उसके यहाँ एक साल रहा। पर वह तो दस आँखों वाली निकली। मैं खाली हाथ लौट आया, फिर पलटकर नहीं देखा।

डॉ.नोङाल-फिर क्या हुआ ! कहानी तो बढ़िया है।

नन्दलाल- मेरा काम तो नृत्य सिखाना है। नजदीक रहना ही अच्छा है, सोचकर मोइराङखोम में एक स्त्री के यहाँ भाड़े पर रहा। वह स्त्री भी बहुत भली थी। बहुत ज्यादा चिंता करने के कारण अधिक उम्र की दिखने लगी थी। सज-सँवर कर निकलती, तो ऐसी कि उसके सामने नई बहुएँ भी पानी भरें। चंचल आँखें, जो किसी को भी रिझाने की शक्ति रखती थीं।

डॉ.नोङाल- ओजा, आपको भी रिझाया था क्या ! या केवल दूसरों को ही !

नन्दलाल- थी तो स्त्री ही। मेरी चतुराई के आगे वह कामयाब नहीं हो पाई। वह मुझसे हार गई।

डॉ.नोङाल- गुड, वेरी गुड!

नन्दलाल- मुझे एक बात बहुत बुरी लगी। वह ऐसी खराब निकली कि अपनी सुन्दर-सुन्दर तीन बेटियों में से किसी एक की भी शादी मुझसे नहीं की। ड्रामा करने वाला, नृत्य सिखाने वाला हूँ, शायद इसलिए मुझे पसंद नहीं किया। बी.ए., एम.ए. ढूँढ़ कर ब्याह दीं, मैं यूँ ही रह गया।

डॉ.नोङाल-मौके-मौके की बात है। बुरा क्या मानना!

नन्दलाल- इसी तरह कई साल निकल गए। सोच रहा था बूढ़ा हो जाऊँगा, इसी बीच न जाने कहाँ से एक हवा का झोंका आया। इस्स! यह क्या हो गया, सोच हल्ला मचाया पर इस स्थिति में पहुँच गया। बच नहीं पाया।

डॉ.नोङाल- (हँसते हुए) घर जमाई बनने का भी एक सिलसिला चलता है। एक जगह से दूसरी, दूसरी से तीसरी। एक्पीरियन्स तो काफी हो गया! इससे भी बढ़कर यह कि सब एक जैसे लोग ही टकराए!

नन्दलाल- अब तो मैंने यहाँ एक लम्बी लकीर खिंच दी है। जीना-मरना अब यहीं पर होगा। भविष्य में क्या होगा, इसे कौन बता सकता है!

डॉ.नोङाल-कोई बात न छिपाते हुए आपने खुले दिल का परिचय दिया। मुझसे जो बन पड़ेगा, सहायता करूँगा। खुशी से रहिए। अपना ही घर समझिए। घर की बढ़ती की कोशिश करते हैं।

नन्दलाल- कहानी का एक प्रसंग छूट गया है। जरा इसे भी सुन लीजिए, फिर मैं भी एकदम ही हल्का हो जाऊँगा।

डॉ.नोङाल- हाँ-हाँ, जरूर सुनाइए। अलग तरह की कहानी, मैं भी रुचि से सुन रहा हूँ।

नन्दलाल- बताया था न, मोइराङखोम वाली स्त्री, चुम्बक जैसी! उसकी सबसे छोटी बेटी, जो परी जैसी दिखती थी, एक दिन किसी पराए मर्द के साथ सिनेमा देखने चली गई। इस बात पर उसके पति परमेश्वर ने बड़ी चालाकी से घर पर छोड़ दिया। दुःख भी होता है।

डॉ.नोङाल- स्त्री अच्छे दिल की नहीं थी, भगवान सबक सिखाएगा ही। है कि नहीं!

नन्दलाल- मेरे रूस, अमेरिका, फ्राँस, जर्मन, जापान आदि हो आने के बाद तो जबर्दस्ती मेरे गले पड़ने के लिए काँटों वाला जाल बिछाने लगी, पर मुझे फँसा नहीं पाई। आगे उसका क्या हुआ, नहीं जानता।

डॉ.नोङाल- इतने देशों में आप क्या करने गए थे !

नन्दलाल- बताया था न, नृत्य के लिए, मणिपुरी नृत्य के लिए।

डॉ.नोङाल- कलाकार हो, इसलिए शरीर को संभालकर रखना ही पड़ता है। शक्ल-सूरत, रंग सब सुन्दर रखना पड़ता है। पर आपका शरीर पस्त सा लग रहा है। कोई बीमारी हो गई क्या ! इंजेक्शन या फिर गोली लेना चाहोगे ?

नन्दलाल- उम्र हो गई है, पर शरीर को कुछ नहीं हुआ है। तीन-चार घण्टे तक उछल-कूद वाला नृत्य कर दर्शकों को टकटकी बांधे बिठाए रख सकता हूँ।

डॉ.नोङाल- फिर ऐसा क्या हुआ !

नन्दलाल- घर की छत टपकती है, इसलिए नींद पूरी नहीं हो पाई।

डॉ.नोङाल- हमारे घर की छत टपकती है !

नन्दलाल- सरकण्डों की छत तो क्या, ईटों का पक्का घर भी दरक जाए, तो पानी चूता ही है। जब शुक्ल पक्ष शुरु होगा तब पता चल जाएगा। जहाँ-जहाँ सरकण्डों पर गांठें, हैं, वहाँ-वहाँ रात को असंख्य तारे टिमटिमाते हैं। इस बार बड़ों से सलाह करके टीन की छत डलवा लेंगे। (इतने में राधे हाथ नचाती हुई नृत्य की मुद्राओं के साथ मुँह से ताल के बोल बोलते हुए घर से आँगन की ओर आती है।)

राधे- ताद्रिमी-ताद्रिमी, ता-ता थैया, थैया, ताद्रि.....(नोङाल को देखकर शर्मा जाती है। नृत्य और बोल दोनों ही एक साथ थम जाते हैं। असमंजस में समझ नहीं पाती क्या करे)

नन्दलाल- शर्माओ नहीं, शर्माओ नहीं, आगे करो। शर्माओगी तो नहीं आएगा। लो फिर शुरू करो।

द्रुत ताल वाला- एड़ी उचकाओ, कंधे थोड़ा झुकाओ, पीठ सीधी रखो, काँख उठाओ- आगे करो। (मुँह से बोल बोलते हुए टेबल बजाता है।)

ग्र ग्र धेन ताधेन धिनतेन ताता

खित्त घिन धेन धिनतेन ताता

(बीच में रुककर) इसे कुछ कहो, तो सुनती नहीं है। ठीक है, छोड़ो। एक-एक चाय तो मिल सकती है राधे!

राधे- (अनसुना करते हुए) मुझे तो पता ही नहीं चला, तातोन आप कब आए! आज तो बड़ी खुशी हो रही है।

डॉ.नोङाल- इबेम्मा तुम तो नृत्य में बहुत कुशल हो गई हो। बहुत निखर भी गई हो।

राधे- (फिर अनसुना करते हुए) ये बच्चा किसका है तातोन!

नन्दलाल- लगता है बाजू वाली यमुना का बेटा है। बहुत देर से हमारी बातें सुन रहा है।

सनाहन्बी- (चाय लेकर आती है) किसके बच्चे की बात कर रहे हो !

राधे- इसकी, जो तातोन के पास खड़ा है। मयाङ का बच्चा जैसा दिख रहा है।

सनाहन्बी- यह तो बहुत देर से खड़ा है। मैंने तो इस पर ध्यान ही नहीं दिया। मैं तो सोच रही थी, नृत्य देखने आया है।

नन्दलाल- इसे कुछ खाने को दे दो राधे। मैं जरा बाजार तक हो आता हूँ। साले साहब आएँ हैं, मछली खरीद लाऊँ। (अपनी जेब टटोलता है)

सनाहन्बी- चाय पीकर जाना। बात तो खूब बढ़िया कही ।

नन्दलाल- हुम्म, पहले मछली ले आना सही रहेगा। नहीं तो खाने में देर हो जाएगी। (चलते-चलते) मृदंग-ढोलक सब संभाल लेना राधे। बच्चे न खेलें। (प्रसन्न मुद्रा में निकल जाता है।)

राधे- इमा, यह यमुना का बेटा नहीं लग रहा। इसकी आँखें तो बड़ी-बड़ी हैं। यमुना के बेटे की आँखें तो छोटी हैं।

सनाहन्बी- आँखें बड़ी हों या छोटी, तुम्हें क्या पड़ी है !

राधे- यह है किसका बच्चा है, तातोन ! पूछ रही हूँ, तो जवाब नहीं दे रहे। बात भी नहीं कर रहे। पता नहीं क्या बात है!

डॉ.नोङाल- तुझे क्या पड़ी है, रहने दे इसे यहीं।

सनाहन्बी- बच्ची पूछ रही है, तो बता क्यों नहीं देता। यह नरकट बेचने वाली माधवी का बेटा नहीं है क्या !

राधे- हाँ-हाँ इमा, उनका भी ऐसा ही एक बच्चा है।

सनाहन्बी- तो ठीक है बेटी, जरा इसे पहुँचा आ। माँ का बड़ा लाडला है।

(बच्चे की ओर मुड़कर) लल्ला, तुम माधवी के बेटे हो न ! अरे, जवाब नहीं दे रहा।

राधे –(बच्चे के नजदीक जाकर) आओ बेटा, तुम्हें छोड़ आऊँ।

डॉ.नोङाल- अपने काम से काम रखो। कोई जरूरत नहीं छोड़ कर आने की। मैं खुद पहुँचा आऊँगा।

सनाहन्बी- छोड़ आने दो, क्या है! तुम आराम करो, थके हो।

डॉ.नोङाल- बच्चे को लेने से इंकार कर देंगे।

सनाहन्बी- क्यों नहीं रखेंगे! बच्चा पैदा करके अपने पास नहीं रखेंगे, तो फेंकेंगे कहाँ !

डॉ.नोङाल- (बहुत शांत स्वर में) इमा, मुझे एक बात कहनी है। इस बच्चे को छोड़ने नहीं जाएँगे।

सनाहन्बी- वो क्यों ! इसके पिता नहीं रहे, इसलिए माँ का बड़ा दुलारा है यह। थोड़ी देर के लिए भी नहीं छोड़ती इसे।

डॉ.नोङाल- देख माँ, मैं कब से इस घर से पैसा नहीं मंगवा रहा हूँ, यह तो जानती हो न!

सनाहन्बी- हाँ जानती हूँ, तो इसमें क्या !

डॉ.नोङाल- मेरा सारा खर्चा इसकी माँ ही उठा रही है। आज उसी की वजह से मैं डॉक्टर बन पाया हूँ।

सनाहन्बी- माधवी ने! उसने क्यों ! उसकी ऐसी क्या नजदीकी है ! गज़ब के इंसान हो तुम भी!

डॉ.नोङाल- यह बच्चा बीमारी के काऱण गूँगा हो गया है। इसका इलाज करवाने के लिए ही अपने साथ लाया हूँ।

सनाहन्बी- (नाराज़गी से) घर पर रखकर इलाज नहीं हो सकता। अरे भई, तुम्हारे और माधवी के बीच चल क्या रहा है ! तुम माधवी को अपनाने वाले हो क्या ! माँ का रास्ता बनाने के लिए पहले बच्चे को ले आए ! यह नहीं हो सकता। तुम तो कुँवारे हो। सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ तुम से शादी करने के लिए तैयार बैठी हैं। किसी को जाने-बूझे बगैर यूँ ही ..... ऐसा नहीं हो सकता, बताए देती हूँ। राधे- इमा, कैशामपात की प्रेमिला भी पूछ रही थी, तातोन कब आ रहे हैं! हाल ही में एक फोटो भी चुरा कर ले गई है।

डॉ.नोङाल- ऐसे भी लोग हैं, जो शराब बेचने वाले के घर में रहना पसंद करते हैं।

राधे- तातोन, आप तो डॉक्टर हो। न शराब बेचते हो, न पीते हो। पिताजी, पिताजी हैं। तातोन, एक बात कहनी है, अगर आप इस बच्चे को यहाँ रख रहे हैं, तो मैं इसे नृत्य सिखाऊँगी। कितना प्यारा बच्चा है!

डॉ.नोङाल-तुम प्यार से रखोगी, तो विचार किया जा सकता है।

सनाहन्बी- छोड़ो राधे, तुम भी! कहे देती हूँ, ऐसा नहीं हो सकता। आगे तुम्हारे भी बच्चे होंगे तब क्या होगा! जो संभव न हो, उस काम में मन न लगाओ। बेकार की बातें हैं।

डॉ.नोङाल- आप दोनों शांत हो जाओ। घबराओ नहीं, यह बच्चा माधवी का नहीं है। इसकी माँ मैतै नहीं है। यहाँ रहती भी नहीं है।

सनाहन्बी- फिर इस बच्चे की माँ से तेरा क्या रिश्ता है! क्या लगती है तुम्हारी !

डॉ.नोङाल- इमा, आप भी बिलकुल नासमझ हो। दिमाग काम ही नहीं कर रहा।

राधे- इमा, तातोन का तो पता नहीं, मेरी तो भाभी लगीं। मयाङ देश की भाभी ! मैं तो पहले ही समझ गई थी।

सनाहन्बी- क्या यह सही है बेटा !

डॉ.नोङाल- सही है इमा। सौ फीसदी सही है। राधे ने परीक्षा पास कर ली है।

सनाहन्बी- (दुःखी होकर) मैं बरबाद हो गई। सब खत्म हो गया। कोन्सम की एम.ए. अब बहू नहीं बन पाएगी।

डॉ.नोङाल- ठीक है इमा, इसमें क्या हुआ! वह तो डबल एम.ए है। डॉक्टरेट होने में देर नहीं।

राधे- शक्ल-सूरत कैसी है तातोन ! गोरी है, काली है, सुन्दर है !

डॉ.नोङाल- मेरे लिए तो बहुत सुन्दर है। लम्बी-चौड़ी, गोरी, आकर्षक। जितनी सुन्दर हो सकती है, उतनी सुन्दर। तुम देखोगी, तो जानोगी।

राधे- आपकी बातें सुनकर तो तुरन्त ही मिलने का मन कर रहा है।

सनाहन्बी- क्या बात कर रही हो, शक्ल देखी इसकी। ऐसी सूरत पर कौन सुन्दर लड़की रीझेगी। हमें जलाने के लिए यूँ ही बोल रहा है।

डॉ.नोङाल- वो तो जब देखोगी, तब जान जाओगी।

सनाहन्बी- तो बात सच निकली! लोग पाँच-छः सालों में डॉक्टर बन जाते हैं और इन जनाब को पूरे आठ साल लग गए। जान गई, समझ आ गया। बेटा एक बड़े काम को अंजाम दे रहा था। उसी में थोड़ी अति हो गई।

राधे- भाभी आ कब रही हैं, तातोन !

डॉ.नोङाल- (दुःखी होकर) इसी पर तो मेरी छाती में तूफान उठने लगता है। कभी-कभी मर जाने को मन करता है। नहीं आएगी वह। कभी नहीं आएगी।(अपने बच्चे को गौर से देखता है और उसके सिर पर हाथ फेरता है।)

सनाहन्बी- क्या हुआ ! झगड़ा हो गया, अलग हो गए !

डॉ.नोङाल- आगे कुछ न कहिए इमा! मेरा दिल फटने को है। हार्ट फेल होने वाला है।

सनाहन्बी- ओ ! नहीं रही ! मेरा बेटा बेचारा! बच्चे का क्या होगा ! मेरा पोता ऐसा अभागा !

राधे- (रोने लगती है) ओह भाभी! मयाङ देश की भाभी! अनजानी भाभी! बुरा न मानना भाभी।(बच्चे के नजदीक जाकर सहलाती है।

सनाहन्बी- (पास जाकर बच्चे को बाहों में भरकर रोने लगती है) हो बहू ! मयाङ देश की बहू ! एक गूँगा पोता छोड़ गई। यह क्या किया! (बच्चा डर कर अपने पिता से सटने लगता है। घबराया सा अपने पिता का हाथ खींचते हुए उँगली से दूर इशारा करता है, जैसे चलने को कह रहा हो)

डॉ.नोङाल- (धीरे से) माँ और बहन का इस तरह रोना, यह क्या प्रेम के कारण है या मेरे सामने दिखावा कर रहे हो !

सनाहन्बी- क्या बात कर रहे हो बेटा ! बेटे-बहू को देखा न हो, मिले न हों, तो भी बिना प्यार किए कैसे रह सकते हैं ! बच्चे का सोचकर किसे अच्छा लगेगा ! (इतने में अंगोजाओ शराब के नशे में धुत्त लड़खड़ाते हुए प्रवेश करता है) देखो ! अपने पिता को देखो, कैसे शराब के नशे में डूबा है। इनको किसी के भी दुःख से कोई वास्ता नहीं है। यही होता है हर रोज। सुबह-शाम एक कर रखा है।

अंगोजाओ- (नशे की आवाज में) हाँ, क्या हुआ ! घर में रोना-चिल्लाना, किसको क्या हुआ है ! कौन मर गया है सनाहन्बी! (नोङाल को देखकर चौंकता है) ए ! सबके बीच बैठा हुआ डॉक्टर बेटा जैसा दिख रहा है।(आँखें मिचमिचाकर फिर देखता है. साफ देखने के लिए हाथों को आँखों और गालों पर फेरता है। आँखों पर हथेली से साया कर अविश्वास से देखता है।)

डॉ.नोङाल- मैं हूँ पिताजी,मैं नोङाल। आज ही आया हूँ। थोड़ी देर पहले ही।

अंगोजाओ- (लड़खड़ाती जबान में) ओह ! तुम आ गए !आ गए ! तुम घबराओ नहीं , रोओ नहीं। प्रसन्न रहो। (राधे की ओर मुड़कर) राधे, तुम माँ-बेटी एक साथ क्यों रो रही हो ! रोओ नहीं, खुश रहा करो। इस घर में खुश रहने वाले नहीं रहते। छोड़ो बेकार की बातें। लो देखो, (लड़खड़ाती ज़बान से बोल बोलते हुए खम्ब-थोइबी नृत्य करने लगता है।)

धिन ताङ-ताङ धिन ताङ-ताङ
धिनग्र धिनग्र धिन ताङ ताङ।

देखा, अच्छा लग रहा है न !

राधे- मजाक है, बेमौके का मज़ाक। बाज आए, कैसे पागलों की तरह कर रहे हैं!

सनाहन्बी- आप जरा नाचना बंद करेंगे ! क्या मुसीबत है, बेवक्त शुरू हो जाते हैं।

अंगोजाओ- क्या ! नाचना बंद करूँ, मतलब ! इससे अच्छा पैसा बरसाओ, दस के नोट,सौ के नोट।

(फिर से नाचने के लिए हाथ उठाता है।)

राधे- नाचना बंद कीजिए पिताजी! भाभी नहीं रहीं। आपने सुना नहीं !

अंगोजाओ- भाभी कहाँ से आ गई! बहू आने के लिए शादी तो हुई नहीं। तुम लोग पागल तो नहीं हो गए हो!

राधे- तातोन की पत्नी। हमारी भाभी। समझ में आया आपको पिताजी!

अंगोजाओ- ये क्या, तुम मुझे चिढ़ा रहे हो! बड़ों के साथ ऐसा मजाक मत करो तुम लोग।

सनाहन्बी- हो....! दूर वाली भाभी। मयाङ लड़की, तुम्हारे डॉक्टर बेटे की पत्नी। अब ठीक है ! ज़रा यहाँ बैठ जाइए। सिर पर पानी उड़ेल दूँ। चढ़ा हुआ दिमाग ठिकाने आ जाएगा।

डॉ.नोङाल- (माँ को धीरे से) इमा, पिताजी को साइकोसिस हो गई है। यह बहुत ज्यादा शराब पीने से होता है। इलाज करना पड़ेगा, अब क्या होगा !

अंगोजाओ- क्या खुसुर-फुसुर कर रहे हो ! नहीं चाहते हो कि मैं सुनूँ, तो लो कान बंद किए लेता हूँ। (उँगली से कान बंद करता है)

राधे- भाभी के न रहने की बात है। आपको कष्ट पहुँचाने के लिए षड्यंत्र नहीं कर रहे हैं।

अंगोजाओ- तो यह बात है ! मर गई तो मर गई। मरने वाले को कौन रोक सकता है ! इसके बदले जो जिंदा बचे हुए हैं, मिलकर सोचते हैं कि क्या किया जा सकता है, ताकि सब खुश रह सकें ।(सीधा खड़ा नहीं हुआ जा रहा। पैर लड़खड़ाते हैं, गिरने को होता है। आँखें नशे से बोझिल हैं) भाई गिरने वाला था। गिरा तो सिर फूटेगा। बेहोश हो जाऊँगा। बेहोश हो गया, तो मरना होगा। हुम्म मैं नहीं मर सकता। नहीं मरना चाहता। खुशी से जीयूँगा, स्वादिष्ट खाऊँगा। मरने वालों की चिंता करके मुझे क्या फायदा!

सनाहन्बी- बेटा अभी दुःखी है, ऐसी बात न करें आप, कष्ट होता है। देखो तो अपने पोते को, कैसी बड़ी-बड़ी आँखें हैं इसकी। इसे बिना प्यार करे कैसे रह सकता है कोई!

अंगोजाओ- (आँखें सिकोड़ कर झुक-झुक कर देखता है।) बिना शादी के पोता मिल गया! इसमें कौन अचंभा नहीं करेगा ! कहाँ है पोता हमारा, आओ बेटा, जरा मेरी पीठ खुजा दे तो! टॉफी खरीद कर दूँगा। (बच्चे के नजदीक आने की कोशिश में गिरने को होता है।) राधे- ईस्स ! शराब की कैसी बू आ रही है ! जैसे कुछ सड़ गया हो। मेरा तो जी मिचलाने लगा।

अंगोजाओ- अपना काम कर लड़की, एक्टिंग मत कर। मैं नहीं देखना चाहता।

राधे- मैं तो चली जाऊँगी। तातोन के आगे शर्म नहीं आती आपको पिताजी! लाइए तातोन बच्चा थक गया होगा। बिस्तर पर सुला देती हूँ। (बच्चे को गोद में उठाकर भीतर चली जाती है)

अंगोजाओ- मुझसे कह रही है शर्म नहीं आती... शर्माना क्यों... अपने बच्चे से शर्म! मैंने कुछ गलत तो किया नहीं, फिर क्यों शर्माना ! नहीं आती शर्म, नहीं आती। तुम्हें शर्माना है, शर्माते रहो।

सनाहन्बी- हाय रे मेरा भाग्य, मैंने मनुष्य योनि में जन्म क्यों लिया ! मुझे जल्दी से मौत आ जाए तो सब देखने से बच जाऊँगी। मरना चाहती हूँ, जीना नहीं चाहती।

डॉ.नोङाल-पिताजी ने अभी तक शराब नहीं छोड़ी क्या इमा!

सनाहन्बी- कहाँ छोड़ी है, देख तो रहे हो सब।

अंगोजाओ- बच्ची है, झूठ-मूठ यूँ ही बड़बड़ा रही है। यकीन करो, मैं बहुत सुधर गया हूँ। फिफ्टी पर्सेंट अच्छा हो गया हूँ। लगभग छोड़ देने के बराबर है।

सनाहन्बी- शर्म तो है ही नहीं। इस उम्र में भी ऐसी बेशर्मी ? केवल पीते नहीं है, बेचते भी हैं।

अंगोजाओ- (डाँटते हुए चीख पड़ता है।) चुप रहो सनाहन्बी, तुम मुझे कुछ नहीं कह सकतीं। तुम कुछ मत बोलो। मैं औरतों की बातों में नहीं आता। मैं उनमें से नहीं हूँ, जो औरतों के इशारों पर नाचते हैं। पीना चाहूँ पीयूँगा, बेचना चाहूँ बेचूँगा। इससे किसी को कुछ लेना-देना नहीं। समझ गई सनाहन्बी !

डॉ.नोङाल- पिताजी, आपको इसी तरह आवारागर्दी करनी है, तो मैं भी अपनी ही मर्जी चलाऊँगा। अब मैं कभी इस घर में नहीं लौटूँगा। कौन बरदाश्त करेगा इतना! पूरा घर खुर्दबुर्द हो गया है। अब लोग हमारे घर आते हुए हिचकते हैं। कोई आदर भी नहीं करता। इन सब के कारण मैं बहुत उलझन में हूँ। इमा, आप क्या सोचती हैं!

अंगोजाओ- सोचो-सोचो, माँ-बेटे मिलकर सोचो। मैं अकेला भी रह गया, तो भी बेकार नहीं होऊँगा। तुम्हारे विचार-विमर्श का परिणाम अच्छा आए। सही-सही हिसाब लगाओ, देखें।

डॉ.नोङाल- पिताजी, आप थोड़ी देर शांत हो जाइए। मेरा सिर चकराने लगा है। मैं माँ के साथ किसी निर्णय पर पहुँचना चाहता हूँ।

अंगोजाओ- मेरा सुनना मना है क्या, जो यहाँ से दूर हटने को कह रहे हो !

डॉ.नोङाल- ऐसी बात नहीं है पिताजी। ऐसी कोई बात नहीं है, जो मुझे छिपानी पड़े। मैं कह रहा हूँ, आप थोड़ी देर आराम कर लें। ज्यादा शोर न करें।

अंगोजाओ- तो तुम यह कह रहे हो! देखो मेरे रौंगटे खड़े हो गए। कोई आ रहा है, देखो । कोई साड़ी पहनने वाली भी साथ है। तुम से मिलने आ रहे हैं या मुझसे ! मेरा मेहमान हुआ, तो छ–सात गिलास तो जरूर बिकने वाली है। थोड़ा पैसा बन जाएगा। बड़ी खुशी हो रही है। औरतें भी पीने लगी हैं। मेरा धंधा बढ़ने वाला है।

(बाबातोन और एक स्त्री आगे-पीछे प्रवेश करते हैं)

सनाहन्बी- आओ-आओ बाबातोन, नोङाल भी अभी-अभी पहुँचा है। यह ईबोम्मा कौन है!

बाबतोन- राधे किधर है इमा !

अंगोजाओ- बेटा, तुम राधे के मित्र हो या नोङाल के दोस्त ! मुझे तो लगा था, मेरे वेंडर के ग्राहक हो। बड़ी आशा लगाए बैठा था। मेरी तो किस्मत ही खराब है, देखो।

बाबातोन- आप मुझे भूल गए पाबुङ! मैं बाबातोन हूँ। जैसे ही सुना कि नोङाल आया है मिलने के लिए खुशी से भागा चला आया। राधे को भी एक काम सौंपना था।

अंगोजाओ- (घर की ओर मुड़कर राधे को आवाज लगाता है) इबेम्मा सुन रही हो, राधे, बाबातोन आया है। ज़रा बाहर आओ। बाबतोन, तुमने शादी कब कर ली! कहाँ की रहने वाली है यह इबेम्मा। बड़ी सुन्दर है। अच्छी जोड़ी है तुम्हारी।

बाबतोन- ऐ ! मैं तो यूँ ही पाबुङ ! (नोङाल और बाबातोन ने एक-दूसरे को आँख का इशारा किया, किसी ने देखा नहीं, दोनों मुस्कराए। फिर उस स्त्री से हिंदी में बोले) ये हैं डॉक्टर के पिताजी और ये हैं डॉक्टर की माँ। नमस्ते कीजिए।

(स्त्री ने हाय़ जोड़कर नमस्ते किया और मुस्कराते हुए चारों ओर देखने लगी।)

सनाहन्बी- बाबातोन तुम भी बाहर की बहू लाए हो ! मैंने ध्यान ही नहीं दिया। नोङाल और तुम दोनों में बड़ा कम्पटीशन चल रहा है। दोनों एक से हो। दोस्ती बड़ी जम रही है।

राधे- (आते ही) तामो, आप भी आए हैं ! बड़ी खुशी हो रही है। हमारे तातोन भी अभी आए हैं।

बाबातोन- लो अपनी भाभी से थोड़ी बात-वात करो। अभी मणिपुरी ज्यादा नहीं जानती। आँखें फैलाकर हाथ नचाकर बात करो । तुम तो माहिर हो।

राधे- ठीक है तामो, मेरे कमरे में आराम कर लेंगी।(स्त्री से) आइए भाभीजी, मेरे साथ चलिए।

(दोनों मुस्कराती हुई साथ-साथ भीतर चली जाती हैं।)

बाबातोन- (नोङाल से) अच्छा तो यार, मैं भी चलता हूँ। जिस तरह संभव हो संभाल लेना। मेरा काम खत्म हो गया, मेरी छुट्टी।

डॉ.नोङाल-जल्दी आना, अभी तुमसे बात करनी है।

सनाहन्बी- अभी तो आए हो और जाने की बात कर रहे हो बाबातोन ! बहुत दिनों बाद आए हो, थोड़ी देर बैठ भी जाओ।

बाबातोन- मैं जल्दी लौटूँगा इमा। एक जरूरी काम है, इसलिए जल्दी जा रहा हूँ।

अंगोजाओ- इतनी हड़बड़ी में क्यों जा रहे हो बाबातोन! वह लड़की तो रहेगी न अभी!

बाबातोन- पाबुङ , मुझे आंत की कोई पुरानी बामारी है। उसकी दवाई लेना भूल गया हूँ।

अंगोजाओ- डॉक्टर बैठा है न यहाँ। इसके पास भी दवाइयाँ होंगी।

डॉ.नोङाल- मैं दवाई लेकर नहीं आया हूँ पिताजी। कौन सी दवाई ले रहा है, मुझे तो यह भी नहीं पता। बेहोश हो जाता है, इतना तो जानता हूँ।

बाबातोन- हो जाएगा यार। मैं खुद ही किसी दुकान से खरीद लूँगा। एक गोली निगलनी ही पड़ेगी।

सनाहन्बी- रास्ते में कहीं बेहोश न हो जाना। पत्नी साथ रहती, तो अच्छा होता।

बाबातोन- वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानती इमा। हम एक–दूसरे की खबर नहीं रखते। अपने-अपने से ही मतलब है।

अंगोजाओ- ई! यह क्या कह रहे हो ! क्या हो गया तुम लोगों को ! दोनों का झगड़ा हो गया! नाराज है!

बाबातोन- कोई झगड़ा-वगड़ा नहीं है पाबुङ, नोङाल बेहतर जानता है।

अंगोजाओ-फिर भी उसे यूँ छोड़ जाओगे तो अच्छा नहीं लगेगा। तुम्हारे लिए कह रहे हैं, साथ ले जाओ।

सनाहन्बी- यही सही रहेगा बाबातोन, सावधान रहना ही अच्छा है।

डॉ.नोङाल- इमा जाने दीजिए उसे, रोकिए नहीं। यहाँ बेहोश हो गया, तो हम सब फँसेंगे।

सनाहन्बी- ठीक है, मान नहीं रहे हो, तो बाद में हम सब पहुँचा आएँगे।

राधे- (चाय लेकर आती है) तामो, रुकिए चाय पीकर जाइए। मैं तो समझ गई। बातें खूब अच्छी करती हैं। ओजा के आते ही नृत्य सिखाना शुरू कर देंगे। नई छात्रा मिलने पर ओजा भी खुश हो जाएँगे।

बाबातोन- मैंने तो चाय छोड़ दी है। अपनी भाभी को डबल पिला देना। (बाबातोन जल्दी से निकल जाता है। राधे भी नृत्य की एक भंगिमा बनाती हुई भीतर चली जाती है।)

अंगोजाओ- अरे! चला गया। बड़ों की बात भी नहीं सुनता बाबातोन। ठीक है जा सको तो जाकर दिखाओ। (पीठे-पीछे जाकर उसकी बाँह पकड़कर खींचता घसीटता लेकर आता है)

बाबातोन- छोड़िए पाबुङ ! मुझे छोड़ दीजिए, मत पकड़िए। मेरा सिर गर्म हो रहा है। सीना फटा जा रहा है। बेहोशी छा रही है। मुझे कुछ हो रहा है पाबुङ ! (आँखें चढ़ जाती हैं ।)

अंगोजाओ- बता रहा हूँ, जब तक अपनी पत्नी को लेकर नहीं जाओगे, जाने नहीं दूँगा।

सनाहन्बी- बात बिगड़ जाएगी। बाबातोन को जल्दी जाने दीजिए या फिर अस्पताल ले जाना सही रहेगा !

डॉ.नोङाल- पिताजी, मैं आपके पाँव पड़ता हूँ। बाबातोन को छोड़ दीजिए। स्वादिष्ट-सा एक फॉरेन लिकर आपकी खिदमत में पेश करूँगा। समुच बेहोश हो गया, तो बुरे फँसेंगे।

अँगोजाओ- नहीं बिलकुल नहीं। तेरी सिफारिश से मैं झट मान जाऊँगा, ऐसा तो बिलकुल मत सोचना। इसे दूसरों के मान का जरा भी फिकर नहीं है, इसलिए सबक सिखाकर रहूँगा।(निकट जाकर बाबातोन का गला दबाने लगता है।)

बाबातोन- यार नोङाल, मैं मर जाऊँगा। मेरी साँस रुक रही है। बचाओ मुझे। (नोङाल और सनाहन्बी दौड़कर अंगोजाओ का हाथ पकड़कर अलग करते हैं।)

सनाहन्बी- शराबियों की तो आदत होती है, उचित-अनुचित, सभ्य-असभ्य कुछ नहीं सोचते। सब लोगों के सामने बड़ी शर्म आ रही है। दूसरों के बच्चों पर भी!

अंगोजाओ- उस स्त्री को यही लेकर आया था। इसे ही लेकर जाना होगा।

डॉ.नोङाल- पिताजी, यह स्त्री बाबातोन की पत्नी नहीं, इस बच्चे की माँ है, राधे की भाभी है। माँ-पिताजी दोनों के मान का ख्याल नहीं रखा हो, ऐसा नहीं है। आप लोग मुझे प्यार करते हैं कि नहीं, यही देखना चाहता था। मुझे माफ कर दीजिए।

बाबातोन- सच पाबुङ, स्त्री का स्वामी नोङाल है।

अंगोजाओ- परीक्षा फेल ! परीक्षा फ्लॉप ! बड़ा भोला है। नादान बन कर, अनजान बने रह कर जैसे सारा काम निकाल ही लोगे। आश्चर्य है! बहू जो मर गई, उसे जिलाकर फिर ले आए ! ऐसा कौन कर सकता है ! बाबातोन भगवान हो गया फिर तो।

सनाहन्बी- अब तो पता चल गया न कि बहू है। एक पोता भी है। दूसरों को दोष देने से क्या फायदा! एक

बार तो सोचकर देखो।

अंगोजाओ- हमारे बेटे की पत्नी है, पर लाया तो यही है, इसीलिए लेकर भी इसी को जाना होगा। जहाँ भी रखना हो, जहाँ भी छोड़ आना हो, चाहे कहीं बेच आना हो, इसकी मर्जी।

बाबातोन- (हाथ जोड़कर) पाबुङ, ऐसा न कहिए। मैंने तो दोस्त होने के नाते ही मदद की थी। मैं कुछ नहीं जानता। मुझे माफ कर दीजिए।

अंगोजाओ- (व्यंग्य में हँसते हुए) तुम कुछ नहीं जानते हो! तुम सब मिलकर षड्यंत्र करके मुझे बेवकूफ बना रहे हो। इतना बड़ा धोखा ! ऐसा अनुचित व्यवहार। मैं शराब पीता हूँ। शराबी हूँ, इसलिए मेरी कोई इज्जत नहीं। इसीलिए ऐसा किया। मेरी इज्जत उतारने वाला काम।

सनाहन्बी- अब तो हमारा पोता भी है। अपना खून नहीं है, ऐसा तो नहीं कह सकते। अब तो बड़े होने का फर्ज़ पूरा करने का समय है। बहू के लिए भी मान लो कि मौत के मुँह से लौट आई है। हमारे लिए सौभाग्य ही है समझ लो। बच्चे डर से, नादानी में, भोलेपन में ऐसा कर बैठते हैं। इसे इतनी गंभीरता से लेने की क्या जरूरत है। (जब तक ये बातें हो रही हैं, मौका देखकर बाबातोन कूल्हे हिलाता भाग जाता है।

अंगोजाओ- अरे, यह तो फिर भाग गया। भागो, मैं भी देखता हूँ तुम्हें। जहाँ भी मिलोगे देखना, मैं क्या करता हूँ। (बाबातोन के पीछे भागता है)

डॉ.नोङाल-पिताजी, ओ पिताजी! एक बार रुक जाइए। आपकी बहू को मैं ले जाता हूँ। मैं खुद ही कोई व्यवस्था कर लूँगा। मेरी बात सुनिए पिताजी ! (न जाने अंगोजाओ ने सुना कि नहीं, यूँ ही पीछे भागता चला गया।)

सनाहन्बी- मत रोको, आवाज भी मत दो। रास्ते में सब मिलकर जरूर पीट देंगे। लगता है, पागल हो गए हैं। मजाक बनाएँगे सब। चलो अच्छा ही है। लौटने का इंतजार करते हैं। शराब का नशा भी उतर जाएगा।

डॉ.नोङाल- सब मेरी गलती है इमा। जानता होता, पिताजी इस कदर नापसंद करेंगे तो घर आता ही नहीं। वहीं अच्छा रहता। अब तो जो भी परेशानी है, मुझे ही झेलनी होगी।

सनाहन्बी- आगे से किसी भी काम में, चाहे जितना छोटा हो,चाहे जितना बड़ा, सावधानी बरतो। बिना सोचे -समझे बिना अच्छा-बुरा विचार किए कोई कदम मत उठाओ, ऐसा करना ठीक नहीं,समझ गए बच्चे !

डॉ.नोङाल- इमा, आज मैं बहुत भावुक हो रहा हूँ। मन कर रहा है फूट-फूटकर रो पड़ूँ। यह जानकर भी कि बहू है, पिताजी तो ज़िद पर अड़े हुए हैं। क्या मैं आप लोगों का गोद लिया हुआ बेटा हूँ। क्या मैं इनका बेटा नहीं!

सनाहन्बी- तुम से किसने कह दिया कि तुम इनके बेटे नहीं हो! बूढ़ा सठिया गया है। तुम भी तो देख ही रहे हो। लम्बे अर्से से शराब के नशे में डूबे रहने के कारण दिमाग ठिकाने पर नहीं रहता। इंसानों की तरह तो बात ही नहीं करता। मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ ! बेटा, तुम्हारे पिताजी बहू को स्वीकार नहीं कर रहे हैं, तो क्या उसे वापस वापस भेज देना सही न होगा! इस घर में तो वह रह भी नहीं पाएगी। उसे भी अच्छा नहीं लगेगा। क्या यही ठीक न रहेगा !

डॉ.नोङाल- ऐसा संभव नहीं है इमा। किसी की बेटी है। मजाक कैसे बनने दूँ ! इमा, आप भी सोचिए, क्या स्त्रियाँ खलौना होती हैं ! आप भी एक स्त्री हो। स्त्री ही स्त्री को नहीं समझ पा रही है, क्यों ? आपके साथ या मेरी बहन के साथ ऐसा होता, तो आपको कैसा लगता! ऐसा तो आप भी नहीं चाहेंगी।

सनाहन्बी- ऐसी नौबत न आए, इसके लिए तुम भी इस बुढ़ऊ से परमिशन ले लेते, तो क्या बिगड़ जाता ! बुद्धू तो तुम हो। बेवकूफी की है, तो अब भुगतो।

डॉ.नोङाल- (भावुकता से) समझ गया इमा, मैं सब समझ गया। मेरी बात हो तो मेरा साथ देने वाला कोई नहीं होगा। ठीक है, मैं चला जाऊँगा। आज ही चला जाऊँगा। मैं किसी को भी परेशान नहीं करूँगा। किसी से नाराज़ भी नहीं हूँ। कोई है भी नहीं, जिससे नाराज हुआ जाए।

सनाहन्बी- मजाक कर रही थी, तुम्हारा मन जानने के लिए। क्या कमी है मेरे बेटे के लिए, मैं जिंदा हूँ अभी, भूल गया! अपने डॉक्टर बेटे की उपेक्षा कर उस शराबी, शराब बेचने वाले बेगैरत इंसान का साथ दूँगी, ऐसा सोचना भी मत। मजाक नहीं, सच कह रही हूँ। आज से मैं, तुम, बहू और पोता, हम अलग रहेंगे। वे भी जो करना चाहें करें। अब साफ-साफ बात कर ही लेंगे। पर पता नहीं घर की जो हालत है, यहाँ बहू रह भी पाएगी कि नहीं! बड़ी विकट स्थिति है।

डॉ.नोङाल- इसके लिए इतना सोचने की जरूरत नहीं है इमा। मेरे साथ रहेगी। हमारी जिंदगी जिएगी, यही मानकर खुद आई है। घर की सब हालत पहले से ही जानती है। इसका मन बहुत बड़ा है। सबसे मिल-जुलकर रहेगी । इसके लिए आपको ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है।

सनाहन्बी- यह तो मैं भी जानती हूँ। दृढ़ निश्चयी है। सभ्य घराने की बेटी है।

डॉ.नोङाल- मैं भी सोच रहा हूँ, आपको खुश रखूँ। सबके सामने गर्व करूँ। आपने बहुत कष्ट सह लिया। एक दिन भी खुशी से हँसने-मुस्कराने को नहीं मिला। मैं सब जानता हूँ। इसीलिए तो मैं यहाँ आया हूँ। वहाँ तो इमा मैं राजकुमारों की तरह रहकर आया हूँ। तुम्हारी बहू के घर पर तो मुझे भगवान की तरह रखा था। खाने-पहनने की जो मर्जी होती, वही करता। तुम्हारी बहू इकलौती है। बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ, जीप, कार, दुकानें ही दुकानें, किसी चीज की कमी नहीं। पर माँ तो माँ होती है। अपनी जन्मभूमि की बात ही निराली होती है। प्रेम किए बिना नहीं रह सकते। ना ही भूल सकते हैं। घर की ऐसी हालत और ऊपर से पिताजी का ऐसा रवैया, वहाँ बहू के घर आप भी रहें, तो क्या हर्ज है !

सनाहन्बी- ऐसा भी नहीं कर सकते। तेरी छोटी बहन भी तो है। बावले से तेरे पिता को इस हालत में छोड़कर

चले जाएँगे, तो लोग क्या कहेंगे! लोगों की बात छोड़ भी दो, तो भी क्या तुम्हें अच्छा लगेगा, सोचकर देखो! (अंगोजाओ को हाँफते हुए लौटता देख) लो आ ही गए। कीचड़ से लथपथ तेरा बाप। बहू के सामने मुझे तो बड़ी शर्म आ रही है। मुझे जल्दी से मौत आ जाए, तो अच्छा हो। पिछले जन्म में मैंने न जाने ऐसा क्या पाप कर दिया, जो मुझे इस कदर कष्ट सहना पड़ रहा है। कैसा भाग्य है मेरा! कहीं चैन नहीं।

डॉ.नोङाल- अब सब कुछ भूल जाइए इमा। मैं भी तो तुम्हारे पास हूँ।

सनाहन्बी- बहुत खुश हूँ बेटा। तुझे जन्म देकर मैं धन्य हो गई। अब मैं इंसानों की तरह जीयूँगी।

अंगोजाओ- (लंगड़ाते और बड़बड़ाते हुए प्रवेश) कल का छोकरा, हाथ से झट फिसल गया। बड़ी शर्म की बात है, अंगोजाओ। जन्म से लेकर आज तक किसी ने मुझे परास्त नहीं किया। (दुःखी होकर) ओह ! कितना बेवकूफ था। खुरायजम का नाला लाँघे बगैर लैख्राम की गली से चला जाता, तो क्या वह मुझसे बच पाता ! कोई है ! सनाहन्बी एक चटाई बिछाना, मैं जरा आराम कर लूँ। मेरी साँस चढ़ रही है। (कहते-कहते धम्म से जमीन पर गिर जाता है और वहीं पसर जाता है। चटाई बिछाने का भी इंतजार नहीं करता।)

सनाहन्बी- जमीन पर लोटने से अच्छा है इधर बैठ जाइए। मैं पंखा झलती हूँ। (मोढ़ा खिसका कर उस पर बैठती है। अपने आँचल से हवा करती है। (फिर घबराकर) ईस्स, कहाँ से इतना खून !

डॉ.नोङाल- (घबराकर) किधर इमा ! मैं देखता हूँ। पाँव थोड़ा छिल गया है ! (चोट लगा पाँव उठाकर देखने लगता है। अंगोजाओ नहीं मानता।)

अंगोजाओ- आह ! तुम मुझे मत छुओ, अपना हाथ मत लगाओ।

डॉ.नोङाल- दवाई लगा देता हूँ पिताजी, पट्टी भी बाँध देता हूँ। जैसे मैं कोई अछूत हूँ, देखने ही नहीं दे रहे ! छूना भी मना है क्या !

अंगोजाओ-मैं नहीं कह रहा कि तुम अछूत हो। घाट-घाट का पानी पी चुका हूँ। मैं छूत-अछूत कुछ नहीं मानता।

डॉ.नोङाल- फिर देखने क्यों नहीं दे रहे हैं !

अंगोजाओ- मैं तुमसे किसी भी तरह का कोई फायदा नहीं लेना चाहता, समझे !

डॉ.नोङाल-(गुस्से से) नहीं मानते हो तो न सही। टिट्नस के किटाणु हमला कर देंगे, तो सीधे ही ऊपर पहुँच जाओगे। मैं भी देख रहा हूँ। सब जानकर भी बर्दाश्त कर रहा हूँ। अपने कुँवारे बेटे को उसकी पसंद से शादी करने का अधिकार तक नहीं देना चाहते।

अंगोजाओ- जानता हूँ बच्चे! तुम बड़ों को बताए बगैर हमेशा अपनी मर्जी करते हो। केवल अपने बारे में सोचते हो। यह मुझे मंजूर नहीं।

सनाहन्बी- बच्चा है। अनजाने में हो गया। बेवकूफी कर बैठा, यही समझ लो। बच्चे माँ-बाप को नखरे दिखा

कर खुश होते हैं। इनसे मुकाबला करने से क्या फायदा !

अंगोजाओ- यह घर बन्दरों का गढ़ नहीं है। अच्छा या बुरा, मैं घर का स्वामी हूँ। घर के अन्दर बन्दर नहीं आ सकते। यह मेरा आदेश है। मेरा हुकुम जो नहीं मानेगा, वह इस घर से विदा- फिर कभी न मिलने के लिए। मेरे होने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। ऐसे में घर उन्नति करे तो कैसे !

सनाहन्बी- लो और सुनो! बात तो ऐसे कर रहे हैं, जैसे कोई बहुत समझदार इंसान हो। सूरत तो देखो, और जो काम करते हो उसका तो कहना ही क्या! बड़े-बुजुर्ग की इज्जत उसके रवैये के अनुसार होती है, इतना खुद भी नहीं जानते।

डॉ.नोङाल- छोड़िए इमा, पिताजी की हालत इससे बदतर हो, इससे पहले किसी सायक्याट्रिस्ट को दिखा देना अच्छा रहेगा। एक या दो महीने के लिए अस्पताल में भर्ती कर देते हैं। अच्छी तरह इलाज करवाना पड़ेगा। जिम्मेदारी मैं लेता हूँ। आपकी बहू भी साथ देगी। सचमुच पागल हो गए, तो बाद में बहुत पछतावा होगा।

अंगोजाओ- क्या कहा ! तुम मुझे कह रहे हो कि मैं पागल हो जाऊँगा, तेरी ये मजाल! अपने पिता को ही पागल करार दे रहे हो। पागल तो तुम हो- अपने आप कैसे जानोगे कि तुम पागल हो। मैं तो तुम लोगों के लिए चिंतित हूँ। मैं पागल तो हूँ नहीं, फिर डॉक्टर के पास क्यों जाऊँगा ! दवाई क्यों खाऊँगा ! आश्चर्य है, देखो इन पागलों को !

डॉ.नोङाल- हाँ इमा, पैसा चाहे जितना भी लग जाए, आपकी बहू जुगाड़ कर लेगी। बाहर ले जाना पड़े, तो भी ले जाएँगे। पिताजी को अच्छा करना ही होगा। मैं बहुत परेशान हूँ इमा, बहुत कष्ट हो रहा है।

सनाहन्बी- न जाने क्या होगा ! मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा कि क्या करूँ, क्या नहीं ! जैसा तुम ठीक समझो, उस पर विचार करना होगा। अब क्या चारा है!

अगोजाओ- (अपने में बड़बड़ाता है) सब मिलकर मुझे पागल बनाने वाले हैं। माँ-बेटा एक हो गए। मुझे बचकर निकलना ही होगा। देखें, कौन किससे आगे है। यह सब इसकी माँ की ही करतूत है। इसी को कहीं और भेजना पड़ेगा। हुम्म.. पर भेजूँ कहाँ! इसके बिना मैं रहूँगा कैसे ! शराब का पैसा कौन देगा...क्या करूँ... !

सनाहन्बी- फिर तो आप भी थोड़ा मेरा कहा मान ही लीजिए। आप सुधर जाएँ, बड़े होने के नाते सभी को सही रास्ता दिखाएँ, तो इससे बढ़कर हमें कुछ नहीं चाहिए। बेटा डॉक्टर बन गया है। खूब पैसा बना सकता है। लाभ मिलने का समय आया और हमने इसका ही बहिष्कार कर दिया, तो नुकसान हमारा ही है। इसलिए आपको जो नापसंद हो, मुझे बताएँ। आपका बेटा सही कर देगा। यह भी बच्चा नहीं रहा। सही-गलत सब समझता है।

अंगोजाओ- पर मैं तो बार-बार कह चुका हूँ। फिर से कहने की कोई जरूरत नहीं।

डॉ.नोङाल- छोड़ो इमा, पिताजी बहुत ही जिद्दी हैं। ठान लेते हैं, तो अड़ जाते हैं, चाहे सही हो या गलत। ये

बदलने वाले नहीं हैं, मैं जानता हूँ। मैं किसी को भी कोई कष्ट नहीं देना चाहता। मेरा आज ही चले जाना ठीक होगा। कभी पिताजी मुझे याद करें, तो खुशी-खुशी आ जाऊँगा। इमा, आप भी दुःखी न हों। (रिक्शे की आवाज आती है) रिक्शा, ऐ रिक्शा, रुको, चलना है। थोड़ी देर रुको। (घर की ओर) राधे, सुन रही हो राधे ? अपनी भाभी को ले आओ। कह दो आ जाए, बच्चा भी। (राधे, उसकी भाभी और बच्चा एक-एक कर निकल आते हैं।)

राधे- कैसे, क्या फैसला हुआ तातोन ! मुझे तो भाभी बड़ी प्यारी लगी। एकदम शांत और हमेशा मुस्कराने वाली। (अपने पिता से) पिताजी, यह क्या कर रहे हैं आप ! मैं तो अचरज में पड़ गई हूँ, क्या करूँ समझ ही नहीं आ रहा। (अपनी माँ से) इमा, यूँ ही क्या चुपचाप देख रही हो ! तातोन को क्यों नहीं रोक रही हो ! (नोङाल अपनी पत्नी के साथ बच्चे का हाथ पकड़े नमस्ते करके निकल जाता है।

अंगोजाओ- यह तुम बच्चों का काम नहीं है। इबेम्मा, तुम चुप रहो ।

राधे- इमा-पिताजी कितने निर्दय हैं, कोई ऐसा करता है भला ! मेरे तो तन-बदन में आग लग रही है। किसी ने भी उन्हें नहीं रोका। बड़ी शर्म आ रही है। हमने कितनी असभ्यता दिखाई है। हममें इंसानियत तो है ही नहीं।

अंगजाओ- जिसको लज्जित होना है, होता रहे। मैं क्यों लज्जित होऊँ!

सनाहन्बी- छोड़िए भी, क्यों बच्चों की बराबरी कर रहे हैं, बुला लाते हैं। अच्छा या बुरा, अपना ही बच्चा है। छोड़ नहीं सकते। लोग हमें ही ताने देंगे। शराब तो बेचते ही हो, ऊपर से पियक्कड़ भी हो। इसे कोई पसंद नहीं कर रहा। कुछ समय बाद मुहल्ले वाले हमें निकाल बाहर कर देंगे, देख लेना। इतना तो मैं जानती हूँ।

अंगोजाओ- कोई शराब बेचता है, तो उन्हें क्या मतलब ! हमें मुहल्ले वाले पाल रहे हैं क्या! उनकी बर्बादी के लिए हमने क्या कर दिया ! हम तो जीने की कोशिश कर रहे हैं। किसी का कुछ चुरा तो नहीं रहे। इससे अच्छा सनाहन्बी, थोड़ा ज्यादा पैसा लगाकर दुकान बड़ी करते हैं। लाल- सफेद सभी तरह की रखेंगे, तो हम भी आदमी बन जाएँगे। इसलिए कोई तुम्हें शराब बेचने वाली कहे तो नाराज़ मत होना, शर्माना भी नहीं।

सनाहन्बी- खुद तो किसी लायक हैं नहीं, मुझे भी शराब बेचने वाली बना रहे हैं। हिम्मत तो देखो, कुछ भी कर गुजरने की। जीते जी मार डाला।

राधे- कुछ समय बाद इमा, मुझे भी शराब बेचने वाले की बेटी, ओजा को नृत्य के गुरु शराब बेचने वाले...। ये सुन्दर नामकरण एक के बाद एक को.....।

सनाहन्बी- शराब में जितना डूबना था, डूब चुके। जितना पी सकते थे, पी चुके। अब तो सुधर जाओ। दामाद नन्दलाल की भी उम्र हो रही है। मुझे नहीं लगता कि अब वे भी यहाँ ज्यादा समय टिकने वाले हैं। वह भी भाग गया, तो सोचो घर की क्या हालत होगी। चिंता की बात है।

राधे- भागेंगे तो नहीं इमा। हमारे ओजा तो इसी घर में मरने की बात करते हैं।

अंगोजाओ- राधे तुम कहीं मत जाना बेटी! मेरी बेटी समझदार है और नन्दलाल भी बड़े दिल वाला, नृत्य में मशहूर। तुम भी भोली बनकर न रह जाना। ओजा के रहते जितना सीख सकती है सीख ले। कठिन भंगिमाएँ, सुन्दर चाल सीखना न भूलना! कुछ समय बाद तो तुम दोनों मिलकर देश-विदेश घूमोगे, कोना-कोना छानोगे। फिर तो पैसा ही पैसा होगा। कष्ट का नामोनिशान नहीं।

सनाहन्बी- फिर आप भी शराब में डूबकर पैसों में तैरना-उतराना। अंजलि भर-भर कर पैसा पीना। हथैली भर-भर कर पैसा बिखेरना। बहुत सुन्दर, बहुत खुशहाली।

राधे-अगर पिताजी कह दें कि शराब नहीं बेचेंगे, तो देखना मैं क्या करती हूँ इमा। डांस सेंटर खोलूँगी, छात्रों को ट्रेनिंग दूँगी। सेंटर का नाम होगा। दुनिया घूमूँगी।

अंगोजाओ- जापान जाना हुआ तो मैं भी चलूँगा , झाँझ बजाने वाला बन जाऊँगा। मैं भी देश-विदेश घूमना चाहता हूँ बेटी।

राधे- क्या बात कर रहे हो पिताजी ! शराब में धुत्त होकर बेताल झाँझ बजाने उठ गए, तो नृत्य पूरा बिगड़ जाएगा। नृत्य करूँगी या आप को संभालूँगी। अच्छा-खासा नाटक हो जाएगा।

सनाहन्बी- मैं भी रोगियों के इलाज के लिए एक क्लीनिक खोलूँगी। अपने घर के पश्चिम में क्लीनिक, पूरब में डांस सेन्टर, मैं मरीजों को संभालूँगी और पैसा भी संभालूँगी।

अंगोजाओ- मेरी शराब बेचने की जगह कहाँ होगी! दोनों के बीच, यही ठीक रहेगा न सनाहन्बी !

सनाहन्बी- जो भी हो, इनका काम बनना चाहिए। सोच रही थी इसे ही भूल जाएँ। पता नहीं क्यों, कभी भूलते ही नहीं! शराब की दुकान उठा कर चाय की दुकान लगाएँ, तो चाय, पकौड़े, भाजी, खिचड़ी बहुत बिकेंगे। यह सुनेंगे तो मौन धर लेंगे, मैं जानती थी।

राधे- मन भाई, जल्दी क्योंकर भुलाई !

अंगोजाओ- मन भर गया तुम लोगों का, खुश हो, और कुछ बचा है !

राधे- हमारा तो हो गया। आपका गलत वर्तनी वाला लेक्चर भी थोड़ा सुन लें।

अंगोजाओ- तुम लोग तो पीते नहीं, इसलिए समझते भी नहीं। थोड़ा सा गटक लो तो दुःख-दर्द सब डेम-केयर, अलग दुनिया। सेवन करना सीख जाओ तो इससे बढ़िया दवा नहीं। बड़े-बड़े लोग इसी की मदद से कठिन से कठिन काम को आसानी से अंजाम देते हैं। मेरा यकीन करो, सच कह रहा हूँ, नहीं तो नरक में जा गिरूँ। बहुत कड़वी है। चाय-कॉफी या शर्बत जैसा स्वाद होता, तो दिन में न जाने कितने गिलास पी सकता हूँ, शर्त लगा लो।

राधे- सही है पिताजी, बहुत कड़वी है, गले में बहुत लगती है। पेट जलता है, सिर चकराता है। शून्य में मन बहता है।

सनाहन्बी- पगली, तूने ये सब कैसे जान लिया ! तुझे कैसे पता चल गया !

राधे- हमारे ओजा किसी जमाने में थोड़ा-बहुत पीते थे, तभी चखकर देखी थी। अब तो इन्होंने बिलकुल छोड़ दिया। साधु बन गए। वैष्णव हो गए।

सनाहन्बी- ओजा कितने दृढ़ निश्चयी हैं, इसीलिए इतने मशहूर हैं। और हमारे इनको देखो, बोलना ही बेकार है। लोग पीते हैं, तो सही जगह और सही समय देखकर, शालीनता से पीते हैं। और हमारे ये हैं कि सुबह क्या,दोपहर क्या और रात क्या! फिर सीधे भी खड़े नहीं हो पाते। सीधे बोल तक नहीं पाएँगे। आँखें एकदम लाल हो जाएँगी। फिर जो भी सामने पड़ जाए, उससे उलझना और चीखना-चिल्लाना शुरू कर देंगे। कायदे से तो थाने में पकड़वा दें, तभी ठण्डक मिले।

राधे- अपनी जबान को क्यों कष्ट दे रही हो इमा, सब व्यर्थ है। चाहे कितना भी बोलो, कान देने वाले नहीं हैं।

अंगोजाओ- बोलो-बोलो, मुहल्ले भर को सुनाने के लिए माइक लगाना चाहो, तो वो भी खुशी से लगा लो।

सनाहन्बी- शक्ल तो देखो, शराबियों का मुँह ! मुझे तो ज़हर जैसा लगता है। जरा भी नहीं सुहाता।

अंगोजाओ- तुम भी अपनी बेटी का अनुकरण कर लो। ये तो नृत्य भी जानती है। सेंटर भी खोलने वाली है। नंदलाल से ही सीखना चाहती हो, तो बोलो। लाज आएगी क्या! दामाद से सीखने में शर्म आ रही हो, तो मैं ही सिखा देता हूँ। देखो इस तरह करो।(मुद्राएँ बनाते हुए मुँह से बोल बोलने लगता है।)

खित्ता धेनता धिनतेन ता
खत्ता धेनता धिनतेन ता
ता ख्रख्र ताङ धिन थेन

(चक्कर आने से गिरने को होता है, और रुक जाता है)

राधे- (घबराकर रोकती है) कहीं गिर न पड़ना! छोड़िए पिताजी, आपसे ये सब जरा भी नहीं निभता, हमें भी अच्छा नहीं लगता। आता तो कुछ है नहीं, केवल दिखा रहे हैं। सब गलत। पूरा का पूरा गलत। आप तो नृत्य को ही बर्बाद कर देंगे।

अंगोजाओ- अरी, थोड़ी देर के लिए गुरु बन रहा था, गलत हो गया क्या !

सनाहन्बी- मेरे लिए तो केवल हँसना रह गया है। पागलपन में लोग क्या-क्या करने लगते हैं !

राधे- ठीक कह रही हो इमा। थोड़ा हँस भी लें। इतनी मुसीबत में और क्या करें!

सनाहन्बी- बेटी, मेरी तो हँसी गायब हो गई है। सोचती हूँ तो पसीने छूटने लगते हैं। तुम और ओजा नहीं होते, तो मैं अपना कुछ जुगाड़ कर लेती। सब मेरे ही कंधों पर धरा हुआ है। मुहल्ले के लिए पोत्येङ, देव-कर्मों में देने के लिए पैसा, हाउसी-लौटरी, ये तो कुछ जानते ही नहीं। न जिम्मेदारी ही लेते हैं। मेहनत जरा भी नहीं करना चाहते और भोगना सब चाहते हैं।

राधे- ठीक कहती हैं, पर अभी शांत हो जाइए। ओजा और मैं तो जितना संभव है, कर ही रहे हैं।

सनाहन्बी- कोसूँगी, जी भर कर कोसूँगी। मुझे बहुत तकलीफ होती है।

अंगोजाओ- (गुस्से में) औरत जाए भाड़ में। औरतों की उँगलियों पर नाचने वाला मैं नहीं हूँ। ठीक है, मैं काम नहीं करता, तो तुम्हें क्या मतलब ! तुम्हें क्यों जलन हो रही है!

सनाहन्बी- काम नहीं करते, पर शांत रहते, तो सारे कष्टों को अपना भाग्य समझ कर सह लेती। नशा मत करो, यही तो कह रही हूँ।

अंगोजाओ- कुछ करो तो शराब, कुछ कहो तो शराब। शराब जैसे तुम्हारी दुश्मन है। शराब तुम्हें काटती है क्या ! सारा दोष शराब पर मढ़ देते हो, क्या यह सही है।

राधे- पिताजी, आप भी चुप हो जाइए। इमा मन की भड़ास निकाल रही है।

सनाहन्बी- खुद को समझाना मुश्किल हो रहा है मेरे लिए। मन में आग सुलग रही है। मैं भी मर क्यों नहीं जाती! मेरे मरने के बाद पेट भर-भरकर पीते रहना। मौज करना अकेले-अकेले।

अंगोजाओ- ऐसा न कहो सनाहन्बी, स्वादिष्ट खाकर और सुन्दर-सुन्दर पहन-ओढ़कर जीना, क्या तुम्हें आनंद नहीं देता !

सनाहन्बी- तुम्हारे पागलपन को झेलते रहने से अच्छा, पोखर में छलांग लगाकर डूब न मरूँ!

अंगोजाओ- श्राद्ध के लिए पैसा कहाँ से आएगा ! थोड़ा पैसा जुटा लें, तब मरना, अगर तुम्हारा मरना बहुत ही जरूरी है तो ! तब तक इंतजार कर सकती हो न !

राधे- पिताजी, आप इमा से ऐसी बातें न करें। मुझे सहन नहीं हो रहा है। पिताजी, आप और इमा दोनों शांत हो जाएँ। (स्वगत) हमारे ओजा कहाँ गायब हो गए इस वक्त।

अंगोजाओ- तुम्हारी इमा की मनोकामना पूरी हो इबेम्मा, कोई मरना चाहे, तो रोको मत, मर जाने दो। मैं तो नहीं रोकूँगा।

सनाहन्बी- ठीक है, तुम भी खुश रहो। (सनाहन्बी तेजी से निकलने को होती है और राधे उसे पकड़ने की कोशिश करती है। मा-बेटी में थोड़ी गुत्थम-गुत्था होती है।)

सनाहन्बी- इबेम्मा, छोड़ो मुझे। मेरा कलेजा छलनी हो रहा है। छोड़ो-छोड़ो। (छूटकर भाग जाती है।)

राधे- पिताजी, इमा को रोक लीजिए। ऐसे देखते मत रहिए। इमा को रोक लीजिए।

अंगोजाओ- तुम्हारी इमा को घोंघे बहुत पसंद हैं, वही चुनने गई होगी। तुम भी पिछवाड़े से बाँस की जड़ उखाड़ लाओ, शाम को जवानों के साथ बैठ कर पीने के लिए।

राधे- यह मजाक का समय नहीं है पिताजी, इमा पोखर तक पहुँचने वाली होगी।

(सनाहन्बी थाङजिङ के काँटों के बीच बेचैनी से हाथ-पैर मारती है)

अंगोजाओ- घुटनों तक तो पानी है नहीं। थोड़ा पानी हलक में जाएगा, तो अपने आप लौट आएगी, यूँ ही दिखा रही है।

राधे- गाय के खुर भर पानी में भी लोग मर जाते हैं। माँ को तैरना भी नहीं आता। पिताजी, इमा नहीं रहेगी, तो मैं भी चली जाऊँगी। ओजा को भी साथ ले जाऊँगी, वापस नहीं आऊँगी। यकीन कीजिए पिताजी!

अंगोजाओ- (कुछ सोचकर) हुम्म, माँ मर जाए, बेटी भी चली जाए और नन्दलाल को भी साथ ले जाए, तो मैं किसके साथ रहूँगा! ठीक तो है, बेटी नहीं रहेगी, तो मैं भूखो मर जाऊँगा। शराब पीने को भी नहीं मिलेगी। (कपड़े संभालता है) तुम्हारी माँ को रोकने जाता हूँ। लेकर आऊँगा तुम्हारी माँ को।(तेज आवाज में) रुको सनाहन्बी! मैं आ रहा हूँ, रुको तो सही। मैं तो मजाक समझ रहा था और तुम सचमुच ही.....।

(कपड़े संभालकर भागता है। राधे हिचकी बाँधकर रोते हुए पिता को जाते देखती है, फिर टेबल पर औंधे मुँह कर जोर-जोर से रोने लगती है। इतने में नन्दलाल एक बड़ी सी मछली लटकाए आता है। मयाङ बहू भी मुस्कराती हुई पीछे-पीछे चली आती है। बाबातोन बच्चे की उँगली थामे पीछे-पीछे आता है।)

नन्दलाल- आप घर छोड़कर नहीं जा सकते। हम सबको मिलकर इस घर को बनाए रखना है। मैं अकेला कुछ नहीं कर सकता। और फिर मैं तो पराया हूँ। परदेसी हूँ। आश्रय में रह रहा हूँ, मैं क्या जानता हूँ, क्या कर सकता हूँ। यह घर टूटना नहीं चाहिए। साले साहब, आप बेहतर जानते हैं।

डॉ. नोङाल- मैं जानता हूँ। सब जानता हूँ। बड़े ही जब नादानी करने लगते हैं, तो मैं भी सकपका जाता हूँ। मैं तो सोच रहा था, संभव हो तो घर में प्रवेश करने से पहले ही लौट जाऊँ, वही अच्छा रहे। घर के बड़ों की आज्ञा के बिना मैं खुद भी नहीं आना चाहता। क्या कहते हो बाबातोन?

बाबातोन- मैं क्या कह सकता हूँ! मैं तो चाहता हूँ कि सबकी रजामंदी हो, किसी का कुछ न बिगड़े।

नन्दलाल- (मयाङ बहू की ओर मुड़कर) भाभीजी, आपको क्या लगता है ! आप क्या सोचती हैं!

मयाङ बहू- हमको, हमको क्या मालूम ! इट इज़ ऑल राइट, डॉ. नोङाल इज़ ग्रेट ! आइ हेव टु लिव विद हिम, दैट्स ऑल। (सब हँस पड़ते हैं, जैसै सबको समझ आ गया हो।)

नन्दलाल- राधे तुम अभी तक रो रही हो , साले साहब आ गए हैं, लो देख लो। तुम्हारी भाभी और बच्चे भी साथ हैं। लो मछली, भीतर ले जाओ और पकाने की तैयारी करो। माथा और आलू भून लेना। पिताजी को पसंद है, खुश हो जाएँगे।

राधे- मछली बनानी है, पर संभव है घर ही शोक में डूब जाए!

नन्दलाल- हाँ आ ! क्या हुआ! (घबराहट में हाथ से मछली छूट जाती है।)

राधे- इमा मरने के लिए पोखर की तरफ चली गई है।

बाबातोन- इस्स अब क्या होगा !

डॉ.नोङाल- पिताजी क्या कर रहे थे!

राधे- इमा को पकड़ने गए हैं, अभी लौटे नहीं।

नन्दलाल- लो फिर सब लोग अपने-अपने कपड़े संभालो। (कपड़े संभालते हुए भागने की तैयारी करते हैं।)

मयाङ बहू- (थोड़ा घबराकर) फिर क्या हुआ !

राधे- कुछ नहीं भाभीजी, आप आइए मेरे साथ।

(दोनों घर के भीतर चली जाती हैं। बच्चा भी साथ जाता है।)

डॉ.नोङाल- हमारे घर को कुछ हो गया है। सब के सब पागल हो गए हैं। (अपना कुर्ता संभालते हुए जैसे ही दौड़ने को होता है, अंगोजाओ को सनाहन्बी को हाथ पकड़े लाते देख कर झट लौट आता है। थोड़ा मुस्कराता है।)

अंगोजाओ- मैं तो शौकीन आदमी हूँ, इसलिए थोड़ा आनंद लेना चाहता था। तुमने बेकार अड़ंगा डालकर सबको लज्जित कर दिया। अपने बेटे और बहू, दोनों को बुलाकर लाऊँगा। अब मैं भी काम करूँगा। वेंडर उठवा दूँगा। अब शराब बेचना भी छोड़ दूँगा। पर सनाहन्बी थोड़ा-थोड़ा तो पीने देना, इसे मत रोकना।

सनाहन्बी- तुम्हारा पारा जो झट से चढ़ जाता है, उस कारण सारी बात बिगड़ जाती है। सब जानती थी कि यही होगा, फिर भी! अब कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ रही है बच्चों के सामने!

राधे- (बाहर आकर) इमा, तातोन और इनम्मा आ गए हैं, बच्चा भी साथ है।

सनाहन्बी- सच ! यकीन नहीं हो रहा ! अपने आप लौटा या कोई बुलाकर लाया !

राधे- सच इमा, हमारे ओजा को रास्ते में मिले, तो मनामनु कर ले आए। ओजा का काम ही सबसे बढ़िया रहता है। (खुलकर हँसती है।)

अंगोजाओ- करो-करो, अपने ही लोगों की तारीफ करो। मैं शराबी हूँ, इसलिए कोई मेरी तारीफ़ तो करता नहीं।

डॉ.नोङाल- आप के लिए तो मैं हूँ पिताजी, मैं तारीफ करूँगा आपकी। इमा और बाबातोन आपकी तारीफ करने में मेरी मदद करेंगे।

सनाहन्बी- इबेम्मा ! ओजा की कभी उपेक्षा न करना। बहुत गुणी हैं, बड़े दिल वाले भी। मन लगाकर इनकी सेवा करना। इनका मन कभी न दुःखाना।

राधे- (लाड़ दिखाते हुए) ये क्या बोल रही हो आप भी, शर्म नहीं आ रही ! आप भी तो पिताजी की थोड़ी तारीफ कर देना।

सनाहन्बी- ठहरो इबेम्मा, अभी वक्त नहीं आया तारीफ़ का। क्या पता, फिर दौरा पड़ने लगे, सब गुड़ गोबर हो जाएगा। एकदम से नम्बर दे देना ठीक न होगा।

बाबातोन- नम्बर देने में मैं भी रहूँगा इमा, 'सीन' बड़ा सुन्दर है।

डॉ.नोङाल- पहले एक कमिटी बना लेते हैं बाबातोन। प्रेसिडेंट, सेक्रेटरी, एडवाइज़र, मेम्बर, देखें कौन सबसे अधिक नम्बर देता है।

अंगोजाओ- अब कौन सा पद रह गया है, कैशियर और फायनांस मुझे ही देना।

सनाहन्बी- समझदार बने रहिए, जो पद चाहे ले लीजिए। ऐसा कोई नहीं, जो परेशान करे।

अंगोजाओ- (समझदार बनकर) बाबातोन, अच्छा हुआ तुम भी आ गए। मैंने जो कुछ किया, डाँटना-फटकारना किसी का भी बुरा न मानना बेटा!

बाबतोन- मैं नाराज़ नहीं हूँ। नाराज़ होना आता भी नहीं पाबुङ ।

अंगोजाओ- तुम्हारी शादी में देखना, मैं क्या करता हूँ।

डॉ.नोङाल- इसके तो दो बच्चे हैं पिताजी! बच्चों की माँ भी मयाङ है।

सनाहन्बी- तुम लोग एक जैसे विचारों के हो, इसीलिए तुम्हारी दोस्ती भी पक्की है। मगर तुम्हारे इस कम्पटीशन में घर वालों की हालत पतली हो गई।

अंगोजाओ- ओ हो, मुझे तो पता ही नहीं चला, निमंत्रण भी नहीं आया।

सनाहन्बी- ये फिर शुरू हो गए। अजी शादी में मैं ही गई थी। उपहार भी मैंने ही दिया था। आपका तो अपना अलग संसार है। कहाँ से कैसे कुछ याद रहेगा !

नन्दलाल- (अंगोजाओ को दंडवत प्रणाम करने की मुद्रा बनाता है।) इस बार आपको मेरी बात रखनी ही होगी। अब इस घर को मैं साले साहब को सौंपता हूँ। घर के मालिक तो वही हैं, मेरा क्या, मेरा तो साधारण सा रिश्ता है।

अंगोजाओ- ठीक है , ठीक है, इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम दामाद हो और नोङाल बेटा, मेरे लिए दोनों ही बराबर हो। मुझे इतना ही कहना है कि राधे से मशविरा करके डांस सेंटर का काम शुरू कर दो। आधी जमीन तुम्हारे और राधे के नाम कर देंगे। वैसे जमीन मेरी नहीं है, सनाहन्बी के नाम से है। उसकी सम्पत्ति है। मैं भी तुम्हारे जैसा हूँ। तुम्हारी तरह ही मैं भी उसके घर रह रहा हूँ, हम लोग एक जैसे ही हैं।

सनाहन्बी- आधी जमीन पर नोङाल का क्लीनिक बन जाएगा। फिर तो सबके लिए अच्छा हो जाएगा।

बाबातोन- (हँसते हुए) इधर सिरिंज और कैंची, उधर मृदंग और नृत्य– मैं क्या करूँगा! दोनों राजी रहें, इसलिए सुई लगाना भी सीखूँगा और नृत्य में भी शामिल हो जाऊँगा। इस बार तो मेरे मजे हैं।

अंगोजाओ- बाबातोन, बहू को बुरा न लगा हो, तुम समझा-बुझा देना। अभी भाषा समझेगी नहीं, इसलिए जब वह मणिपुरी बोलना सीख लेगी, तब मैं सुलह कर लूँगा।

डॉ. नोङाल- यह काम मुझ पर छोड़ दीजिए पिताजी। मैं सब संभाल लूँगा।

सनाहन्बी- बाबातोन, तुम अभी चले मत जाना। थोड़ी देर बाद फिर शुरू हो गए, तो सुलह करवाने वाला कोई नहीं रह जाएगा। खाना भी यहीं खाकर जाना, ठीक है!

बाबातोन- एक डंडा दे दीजिए, चौकीदार बनकर खड़ा हो जाता हूँ।

राधे- तो फिर मैं खाना बनाने जा रही हूँ। (मुस्कराती हुई नृत्य की मुद्राएँ बनाती चली जाती है।)

नन्दलाल- तो फिर मैं भी मछली तैयार करता हूँ। (मछली काटने की मुद्रा बनाते हुए चला जाता है।)

सनाहन्बी- मैं भी इनको संभालने जाती हूँ। (चली जाती है)

डॉ. नोङाल- स्वाद वाला फॉरेन का लाया हूँ। छोटा सा एक-एक पैग हो जाए !

बाबातोन-अभी ये सब मत करो, अभी तो घमासान थमा है। एक और युद्ध झेलने की हिम्मत नहीं है।

डॉ. नोङाल- इसलिए तो कह रहा था। थोड़ा आराम मिल जाएगा, सचमुच थक गया हूँ।

बाबातोन- तुम कर लो आराम। फिर कुछ हो गया, तो मैं तो भाग जाऊँगा, अकेले रह जाना।

डॉ. नोङाल- ऐसा है तो लो, दूर नाले तक पहुँचा देता हूँ। (फेंकने जैसी मुद्रा में हाथ-पैर फैलाता है)

बाबातोन- देखो, टूटने न पाए, बाद में उठा ले जाऊँगा। (दोनों हाथ मिलाते हैं। बाबातोन नोङाल के कान में कुछ खुसुर-फुसुर करता है, दोनों हँस पड़ते हैं।)

(पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।)

[1968 में निङोल चाकौबा के दिन कोस्मोपोलिटन ड्रामेटिक यूनियन, वाङखै थाङजम लैकाइ, थाङजम मण्डप में मंचित]

(**परिचय :** यह नाटक मूलतः लेशाङथेम तोन्दोन द्वारा मणिपुरी भाषा में लिखा गया है। इसका हिंदी अनुवाद एलाङ्बम विजयलक्ष्मी द्वारा किया गया है। अनुवादक मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।)